ईरानियों का 'रक्षक' बना श्रीलंका ... पेज 5

दैनिक

कारखाने का सफर

मुकाबले के चक्कर में आदमी का जीवन एक कारखाने के समान हो गया है, आदमी का सबसे विश्वसनीय अखबार

विघ्नहर्ता को प्रसन्न करने के लिए... पेज 7

वर्ष 6, अंक 281 | भोपाल, मंगलवार 24 मार्च, 2026 | चैत्र शुक्ल पक्ष, षष्ठी, 2083 | मूल्य 2 रुपए

निगम परिषद ने किया 2025-26 का पुनरीक्षित बजट एवं वर्ष 2026-27 का प्रस्तावित बजट बहुमत के आधार पर पारित

- महापौर मालती राय ने 3938 करोड़ 45 लाख 28 हजार रुपये प्रस्तावित आय तथा 3938 करोड़ 45 लाख 28 हजार रुपये व्यय का बजट किया प्रस्तुत
- परिषद के साधारण सम्मिलन की विषय सूची में शामिल प्रस्ताव भी हुए पारित

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

नगर निगम, भोपाल की परिषद ने महापौर श्रीमती मालती राय द्वारा परिषद के समक्ष प्रस्तुत वर्ष 2025-26 का पुनरीक्षित बजट एवं वित्तीय वर्ष 2026-27 का प्रस्तावित बजट बहुमत के आधार पर पारित कर दिया। महापौर मालती राय ने सोमवार को निगम के परिषद के साधारण सम्मिलन में वर्ष 2026-27 के लिए 3938 करोड़ 45 लाख 28 हजार रुपये की प्रस्तावित आय के विरूद्ध 3938 करोड़ 45 लाख 28 हजार रुपये के अनुमानित व्यय का बजट प्रस्तुत किया। प्रस्तावित राजस्व आय की 05 प्रतिशत राशि को रिजर्व राशि के रूप में रखने के उपरांत 108 करोड़ 89 लाख 29 हजार रुपये का घाटा बजट में दर्शाया गया है। महापौर मालती राय द्वारा प्रस्तुत बजट पर सदन के पक्ष एवं विपक्ष के सदस्यों द्वारा गहन चर्चा की और चर्चा के उपरांत निगम परिषद अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी ने बहुमत के आधार पर बजट को पारित करने की घोषणा की और साथ ही निर्देशित किया कि बजट में मुद्रण एवं टंकण की त्रुटियों को दूर करते हुए 01 अप्रेल 2026 से लागू किया जाए। इससे पहले निगम परिषद के साधारण सम्मिलन में गत 13 जनवरी 2026 के कार्यवृत एवं कार्यवाही की पुष्टि की गई एवं प्रश्नकाल के दौरान सदस्यों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर महापौर परिषद के सदस्यों द्वारा दिए गए।

निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी की अध्यक्षता में सोमवार को नगर निगम, परिषद का साधारण सम्मिलन आहूत किया गया। सम्मिलन में गत साधारण सम्मिलन के कार्यवृत एवं कार्यवाही की पुष्टि की गई। प्रश्नकाल के उपरांत निगम परिषद ने साधारण सम्मिलन की विषय सूची में सम्मिलित आदमपुर खंती में लेगेसी वेस्ट के निष्पादन हेतु प्राप्त निविदा एवं तत्संबंध में उच्च न्यायालय की सिविल अपील प्रकरण में पारित आदेश संबंधी प्रस्ताव पर चर्चा की गई। उक्त प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान अध्यक्ष सूर्यवंशी द्वारा दी गई व्यवस्था पर निगम आयुक्त ने सदन में स्थिति स्पष्ट की। चर्चा उपरांत अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी ने उक्त प्रस्ताव पर निर्णय लेने हेतु निगम आयुक्त को अधिकृत करने की व्यवस्था भी आसंदी से दी।

कार्यसूची में सम्मिलित नगर निगम, भोपाल के अनुपयोगी 145 वाहनों को कंडम घोषित कराए जाने संबंधी प्रस्ताव तथा नगर निगम, भोपाल में 14 स्थानों पर नवीन चिन्हित पार्किंग स्थलों को ई-निविदा के माध्यम से आवंटित किए जाने संबंधी प्रस्तावों को भी बहुमत के आधार पर पारित किया गया।

इसके उपरांत महापौर मालती राय ने अपने महापौर कार्यकाल का चौथा बजट प्रस्तुत किया। महापौर राय ने वर्ष 2025-26 का पुनरीक्षित बजट एवं वर्ष 2026-27 के लिए 3938 करोड़ 45 लाख 28 हजार रुपये की प्रस्तावित आय तथा 3938 करोड़ 45 लाख 28 हजार रुपये के अनुमानित व्यय का बजट प्रस्तुत किया। प्रस्तावित राजस्व आय की 05 प्रतिशत राशि 108 करोड़ 89 लाख 29 हजार रुपये को रिजर्व राशि के रूप में रखने पर 108 करोड़ 89 लाख 29 हजार रुपये का घाटा बजट में दर्शाया गया है। महापौर राय ने बजट भाषण में शहरवासियों को आश्वस्त किया कि शहर के चहुंमुखी विकास एवं जनसुविधाओं में निरंतर वृद्धि हेतु पूर्ण रूप से प्रयास किए जायेंगे और विकास की राह में किसी प्रकार की कमी नहीं आने दी जाएगी।

महापौर मालती राय ने भोपाल के विकास हेतु लगातार वृहद योजनाओं को सौगात के रूप में स्वीकृति प्रदान करने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की और अमृत 2.0, प्रधानमंत्री आवास योजना के अलावा शहर के प्रवेश द्वारों विक्रमादित्य द्वार, नर्मदापुरम द्वार के साथ ही नमोःउपवन एवं ई-बस डिपो आदि का उल्लेख भी किया। महापौर राय ने जलसंरचनाओं के संरक्षण एवं सौंदर्यीकरण हेतु चलाए गए जल गंगा संवर्धन अभियान एवं नागरिकों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के दृष्टिगत प्रारंभ किए गए स्वच्छ जल अभियान के लिए भी मुख्यमंत्री डॉ.यादव के प्रति आभार व्यक्त किया और जल गंगा संवर्धन अभियान में सक्रिय रूप से सहभागिता करने का आव्हान भी सदन के सदस्यों से किया। महापौर राय ने बजट की विशेषताओं एवं विभिन्न विकास कार्यों/योजनाओं हेतु प्रस्तावित राशियों का उल्लेख भी किया। इस दौरान महापौर राय ने उच्च स्तरीय मानकों के साथ पत्रकारिता को सदैव निषपक्ष बनाए रखने वाले स्व.रमेशचन्द्र अग्रवाल की स्मृति में पत्रकारीय मूल्यों को जीने वाले 06 पत्रकारों जिनमें 03 प्रिंट मीडिया से एवं 03 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पत्रकार सम्मिलित रहेंगे को प्रतिवर्ष सम्मानित करने की घोषणा भी की।

महापौर राय द्वारा प्रस्तुत अनुमानित बजट एवं पुनरीक्षित बजट पर पक्ष-विपक्ष के सदस्यों ने विस्तारपूर्वक चर्चा की और चर्चा के दौरान परिषद के सदस्यों द्वारा उठाए गए प्रश्नों के उत्तर भी महापौर राय ने अपने वक्तव्य में दिए और परिषद के समक्ष प्रस्तुत बजट को पारित करने का अनुरोध सदन में किया। अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी ने महापौर मालती राय द्वारा प्रस्तुत वर्ष 2025-26 के पुनरीक्षित बजट एवं वर्ष 2026-27 के लिए प्राकलित बजट को बहुमत के आधार पर पारित करने की घोषणा आसंदी से की।

परिषद के साधारण सम्मिलन की कार्यवाही के प्रारंभ में निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी ने विगत दिनों में मनाए गए विभिन्न त्यौहारों एवं आगामी 02 माह में आने वाले त्यौहारों की बधाई एवं शुभकामनाएं सदन के सदस्यों को दी साथ ही टी-20 वर्ल्ड कप में विश्व विजेता होने का गौरव प्राप्त करने वाली टीम इंण्डिया को भी सदन की ओर से बधाई दी।

अनिश्चित काल के लिए स्थगित होने के पूर्व निगम परिषद ने मध्यप्रदेश भाजपा के सह प्रभारी सतीश उपाध्याय के बड़े भाई अवधेश उपाध्याय, दमोह के सांसद राहुल सिंह लोधी की सुपुत्री, प्रदेश भाजपा के पूर्व संगठन महामंत्री हितानन्द शर्मा की पूज्य माताश्री स्व.जनक दुलारी शर्मा, पचोर विधानसभा प्रीतम सिंह लोधी की माताश्री, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक हेमन्त खण्डेलवाल की सुपुत्री सुश्री सुरभि खण्डेलवाल, भोजपुर विधानसभा के विधायक सुरेन्द्र पटवा की माताश्री स्व.पारस कुंवर बाई पटवा, मध्यप्रदेश के पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा की धर्मपत्नी स्व. सुभद्रा वर्मा, पूर्व विधायक स्व. राव राजकुमार सिंह यादव, समाजसेवी स्व. ओमप्रकाश महेश्वरी बंटी, पूर्व महापौर सुनील सूद के भ्राता राजेश सूद, पूर्व पार्षद शंकर मकोरिया की धर्मपत्नी, पूर्व मंत्री बाला बच्चन की माताश्री के असमायिक निधन पर सदन ने दो मिनिट का मौन धारण कर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

भेल नगर प्रशासन सलाहकार समिति की बैठक में एचएमएस यूनियन ने रखे अपने प्रस्ताव

- क्वाटर में रह रहे कर्मचारियों को क्वाटर का लाइसेंस फीस , पानी का शुल्क और राज्य सरकार के तर्ज पर, जैसे 150 यूनिट तक बिजली आदि का शुल्क न लेने की मांग
- ऑन लाइन शिकायत को बढ़ावा इस तरह देने की मांग कि रहवासी फीड बैक भी दे सके।

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भेल नगर प्रशासन सलाहकार समिति की बैठक गत दिवस देवी अहिल्या बाई सभागार में आयोजित की गई, जिसमें प्रबंधन के साथ सभी प्रतिनिधि यूनियन के सदस्यों के साथ हेस्टू एचएमएस की ओर से एस सेंथिल कुमार, छोटे लाल कोरी, मनीष टेकरे बैठक में शामिल हुए। इसमें निम्नलिखित मुद्दे प्रबंधन के सामने रखे गए और प्रबंधन ने गंभीरता पूर्वक सुना।

सबसे पहले एचएमएस यूनियन के द्वारा बेदखली आमला विभाग के सभी कर्मचारी और नगर प्रशासन के अधिकारियों रमेश चंद्रा, चंद्रकांत विश्वकर्मा, प्रभारी प्रवीण पाटिल एवं उनकी पूरी टीम को सराहनीय कार्य के लिए बधाई दी।

क्वाटर में रह रहे कर्मचारियों को क्वाटर का लाइसेंस फीस , पानी का शुल्क और राज्य सरकार के तर्ज पर, जैसे 150 यूनिट तक बिजली आदि का शुल्क न लिया जाए।

ऑन लाइन शिकायत को बढ़ावा इस तरह दे,की रहवासी फीड बैक भी दे सके।

त्रिवेणी हॉस्टल के पदाधिकारी में बदलाव किया जाए।

5. सोसायटी कर्मचारियों के क्वाटर आवंटन के नियम में बदलाव कर सीनियरिटी या लकी ड्रा के आधार पर आवंटित किया जाए।

सोसायटी कर्मचारियों को आवंटित क्वाटर जो कब्जा नहीं ले रहे है,उन क्वाटर को ,जरूरत मंद को आवंटित किया जाए।

कॉन्ट्रैक्ट में दिए गए मांगलिक स्थल में बुकिंग में आ रही समस्याओं के निराकरण के लिए कर्मचारियों के बुकिंक प्रकिया में पारदर्शिता लाया जाए।

सभी सिविल अनुरक्षण कार्यालयों के लिए नए वाहन खरीदा जाए।

हॉट बाजार के दिनों में ई- रिक्शा के कारण आ रही यातायात बाधा को दूर किया जाए।

द्वारा क्रमांक 6 के सामने बिजली विभाग की सुरक्षा में वृद्धि की जाए।

मार्केट के दुकानों की बकाया वसूली के लिए प्रभावी तरीका अपनाया जाए।

नए दरवाजा, खिड़की और चौखट क्वाटर में जरूरत मंद के यहां लगाया जाए।

सड़क निर्माण और वाटर प्रूफिंग जैसे आवश्यक कार्य का टेंडर अनवरत चलते रहे,ऐसी व्यवस्था बनाई जाए।

पानी की सप्लाई के समय ऐसी व्यवस्था हो जिससे लोग मोटर न चला सके और सभी को पानी उपलब्ध हो सके।

सूअर पालन अब क्वाटर में होने लगा है, जिससे कर्मचारियों को बहुत समस्या होती है,अतः इनको हटा दिया जाए।

हॉट बाजार से सुविधा शुल्क वसूली को पारदर्शी बनाया जाए।

नई बनाई जा रही झुग्गियों को हटाया जाए।

अवैधरूप से रह रहे लोगों को क्वाटर से हटाया जाए।

सड़क निर्माण से पूर्व सड़क का निरीक्षण, और पानी निकासी की व्यवस्था का अवलोकन किया जाए 1

आवश्यक सिविल कार्य हेतु, किसी यूनियन प्रतिनिधि का इंतजार न किया जाए।

बीएचईएल कर्मचारियों के लिए अर्जित अवकाश (EL) नकदीकरण की मांग तेज

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

ऑल इंडिया बीएचईएल एम्प्लॉइज यूनियन (AIBEU) संबद्ध नेशनल फ्रंट ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियन (NFITU) के नेतृत्व में बुधवार, 18 मार्च 2026 को एक प्रतिनिधिमंडल ने बीएचईएल प्रबंधन से मुलाकात कर कर्मचारियों के अर्जित अवकाश (EL) के नकदीकरण की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपा।

यूनियन के इकाई महासचिव एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री रामनारायण गिरी के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने महाप्रबंधक (मानव संसाधन) श्री टी.यू. सिंह से भेंट की और उनके माध्यम से बीएचईएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के.एस. मूर्ति को ज्ञापन प्रेषित किया। प्रतिनिधिमंडल में यूनियन के कोषाध्यक्ष श्री विशाल वाणी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री रोहित कुमार, कार्यालय मंत्री श्री योगेश देवस्कर एवं सह-कोषाध्यक्ष श्री धर्मेंद्र गुप्ता शामिल थे। कार्यवाहक अध्यक्ष आशीष सोनी ने बताया कि यूनियन ने ज्ञापन में कहा कि वर्तमान समय में कर्मचारियों पर शिक्षा, स्वास्थ्य एवं घरेलू आवश्यकताओं के खर्चों का बोझ लगातार बढ़ रहा है, जिससे आर्थिक दबाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है। ऐसे में अर्जित अवकाश के नकदीकरण की सुविधा कर्मचारियों को राहत प्रदान कर सकती है। यूनियन ने यह भी उल्लेख किया कि पूर्व में समय-समय पर इस प्रकार की व्यवस्था लागू की जाती रही है, जिससे कर्मचारियों को आर्थिक सहायता मिली है। यूनियन ने प्रबंधन से मांग की है कि वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए अर्जित अवकाश (EL) के नकदीकरण की प्रक्रिया शीघ्र प्रारंभ की जाए, ताकि कर्मचारियों को तत्काल आर्थिक राहत मिल सके। साथ ही यूनियन ने विश्वास जताया कि प्रबंधन इस मांग पर सकारात्मक निर्णय लेगा। अंत में यूनियन ने कर्मचारियों के हितों के लिए निरंतर संघर्ष जारी रखने की प्रतिबद्धता दोहराई।

समाचार संपादक की कलम से
–राहुल कौशिक

विश्व के सबसे बड़े संसाधन भंडारः वैश्विक ताकत का असली पैमाना

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

आज की दुनिया में ताकत सिर्फ सेना या अर्थव्यवस्था से नहीं मापी जाती, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण से भी तय होती है। हाल ही में जारी एक वैश्विक आंकड़ों के अनुसार, दुनिया के अलग-अलग देशों में विभिन्न संसाधनों के सबसे बड़े भंडार मौजूद हैं, जो उनकी आर्थिक और रणनीतिक स्थिति को मजबूत बनाते हैं। सबसे पहले बात करें तेल भंडार की, तो वेनेजुएला दुनिया में सबसे बड़े तेल भंडार वाला देश है। इसके बाद रूस प्राकृतिक गैस के मामले में शीर्ष स्थान पर है। ये दोनों संसाधन आज भी वैश्विक ऊर्जा जरूरतों की रीढ़ माने जाते हैं।

सोने के भंडार में संयुक्त राज्य अमेरिका सबसे आगे है, जबकि मीठे पानी के भंडार में ब्राजील का दबदबा है। पानी भविष्य का सबसे महत्वपूर्ण संसाधन बनता जा रहा है, और इस मामले में ब्राजील की स्थिति बेहद मजबूत है। अगर खनिज संसाधनों की बात करें तो ऑस्ट्रेलिया यूरेनियम और आयरन ओर (लौह अयस्क) के मामले में अग्रणी है। वहीं, चिली तांबा और लिथियम जैसे महत्वपूर्ण खनिजों में सबसे आगे है, जो इलेक्ट्रिक वाहनों और बैटरी इंडस्ट्री के लिए बेहद जरूरी हैं।

रेयर अर्थ एलिमेंट्स (दुर्लभ खनिज) में चीन का दबदबा है। ये खनिज मोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स और डिफेंस सेक्टर के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इसी तरह चीन सोलर और विंड पावर कैपेसिटी में भी अग्रणी है, जो यह दर्शाता है कि भविष्य की ऊर्जा में उसका वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। कोयले के भंडार में अमेरिका सबसे आगे है, जबकि बॉक्साइट (एल्युमिनियम का प्रमुख स्रोत) में गिनी शीर्ष पर है। फॉस्फेट के मामले में मोरक्को का नाम आता है, जो कृषि और उर्वरक उद्योग के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। डायमंड और वन क्षेत्र में रूस अग्रणी है, जबकि इंडोनेशिया निकल और कांगो कोबाल्ट में सबसे आगे है। ये दोनों धातुएं भी इलेक्ट्रिक बैटरी और आधुनिक तकनीक के लिए जरूरी हैं। हाइड्रोपावर क्षमता में चीन का दबदबा है, जो उसके बड़े-बड़े बांधों और ऊर्जा उत्पादन को दर्शाता है। वहीं, पेरू चांदी के भंडार में सबसे आगे है। इन सभी आंकड़ों से साफ है कि दुनिया में संसाधनों का वितरण असमान है, और यही असमानता देशों के बीच आर्थिक और राजनीतिक शक्ति संतुलन को प्रभावित करती है। जिन देशों के पास अधिक प्राकृतिक संसाधन हैं, वे वैश्विक स्तर पर अधिक प्रभावशाली बन जाते हैं। भारत जैसे देश के लिए यह जरूरी है कि वह अपने उपलब्ध संसाधनों का बेहतर उपयोग करे और आयात पर निर्भरता कम करे। साथ ही, वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों जैसे सोलर और विंड पर ध्यान देना भी समय की मांग है। अंत में, यह कहा जा सकता है कि आने वाले समय में संसाधनों की होड़ और भी तेज होगी। ऐसे में जो देश अपने संसाधनों का सही प्रबंधन करेगा, वही भविष्य की वैश्विक शक्ति बनेगा।

वन्देमातरम केवल एक गीत ही नहीं बल्कि स्वतंत्रता दिलवाने वाला महामंत्र -धर्मेन्द्र सिंह लोधी

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

'वन्देमातरम केवल एक गीत नहीं बल्कि देश को स्वतंत्रता दिलवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला महामंत्र था। 'यह उदगार हैं धर्मेंद्र सिंह लोधी,संस्कृति मंत्री मध्यप्रदेश शासन के जो मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी संस्कृति परिषद भोपाल द्वारा आयोजित दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय साहित्य संवाद के अंतर्गत राष्ट्रचेता स्व. गुरुदत्त को समर्पित 'वन्दे मातरम सार्धशती ' के अवसर पर एन. आई.टी. टी.टी. आर. सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे | इस आयोजन में उद्घाटन सत्र में 'गीत विभाजन से राष्ट्र विभाजन 'तक विषय पर बीज वक्तव्य डॉ. इंदुशेखर तत्पुरुष ने प्रस्तुत किया, इस सत्र की अध्यक्षता ऋषिकुमार मिश्र निदेशक मुकिबोध सृजन पीठ ने की और मंच पर श्वेता सिंह रूस, प्रो. राजपक्षे श्रीलंका उपस्थित थे, सभी मंचस्थ अतिथियों का डॉ. विकास दवे निदेशक साहित्य अकादमी ने किया | इसके साथ ही 'बाल साहित्य में राष्ट्र वंदना ' विषय पर गोपाल माहेश्वरी एवं स्वरांजलि ने अपने विचार रखे इस सत्र की अध्यक्षता डॉ कृष्णगोपाल मिश्र ने की | इसके साथ ही 'आधुनिक माध्यमों में वन्देमातरम ' और 'वन्देमातरम में गीत संगीत ' तथा 'भारत के बाहर भारत ' विषयों पर केंद्रित विमर्श में, मनोज श्रीवास्तव अशोक जमनानी, नरेंद्र पाठक, डॉ. जवाहर कर्नावट,आदि ने राष्ट्रवादी उपन्यासकार राष्ट्रचेता स्वर्गीय गुरुदत्त के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा के साथ वन्देमातरम राष्ट्रगीत पर गंभीर विमर्श में महत्वपूर्ण विचार रखे और कार्यक्रम का समापन गाथा वन्देमातरम की कथा वाचन का प्रभावी प्रस्तुतीकरण भारती इंदौर ने किया |

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय

गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबरः 9826035849, 9425006706

शहीद दिवस पर भोपाल में कैंडल मार्चःअमर क्रांतिकारियों को अर्पित की श्रद्धांजलि, शिक्षा और ड्रग माफिया के खिलाफ लगाए नारे

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल में शहीद दिवस पर एनएसयूआई ने साढ़े 10 नंबर चौराहे से हबीबगंज अंडर ब्रिज स्थित शहीदों की प्रतिमा स्थल तक कैंडल मार्च निकाला। एनएसयूआई जिला अध्यक्ष अक्षय तोमर के नेतृत्व में पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं द्वारा हाथों में मोमबत्तियां और तख्तियां लिए शिक्षा माफियाओं के खिलाफ, फर्जी निजी विश्वविद्यालयों द्वारा किए जा रहे शिक्षा के निजीकरण एवं व्यवसायीकरण के विरोध में, छात्र संघ चुनाव शीघ्र करवाने की मांग को लेकर, निजी स्कूलों की मनमानी फीस वृद्धि के खिलाफ और युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति के विरोध में जोरदार नारेबाजी की। प्रतिमा स्थल पर पहुंचकर कार्यकर्ताओं ने पुष्पांजलि अर्पित कर दो मिनट का मौन रखकर शहीदों को नमन किया।

एनएसयूआई भोपाल जिला अध्यक्ष अक्षय तोमर ने कहा कि शहीदों ने जिस भारत का सपना देखा था, उसमें शिक्षा सबके लिए सुलभ और समान अवसर वाली होनी चाहिए। आज प्रदेश में शिक्षा माफिया हावी हैं और फर्जी संसाधनों के आधार पर निजी विश्वविद्यालय छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। उन्होंने मांग की कि ऐसे संस्थानों की निष्पक्ष जांच कर कठोर कार्रवाई की जाए तथा निजी स्कूलों की मनमानी पर तत्काल रोक लगाई जाए।

प्रदेश उपाध्यक्ष रवि परमार ने कहा कि छात्र संघ चुनाव न करवाकर युवाओं की लोकतांत्रिक आवाज को दबाया जा रहा है। यदि सरकार पारदर्शिता और जवाबदेही में विश्वास रखती है तो तत्काल छात्र संघ चुनाव की घोषणा करे। उन्होंने कहा कि शिक्षा का व्यवसायीकरण शहीदों के सपनों के भारत के खिलाफ है और एनएसयूआई इस अन्याय के विरुद्ध निरंतर संघर्ष करती रहेगी।

प्रदेश महासचिव सैयद अल्तमस ने कहा कि प्रदेश में युवाओं को रोजगार और बेहतर शिक्षा देने के बजाय नशे का जाल फैलाया जा रहा है, जो अत्यंत चिंताजनक है। सरकार को चाहिए कि युवाओं के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए नशे के अवैध कारोबार पर सख्त कार्रवाई करे और सकारात्मक नीतियां लागू करे। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में एनएसयूआई पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। सभी ने संकल्प लिया कि छात्रों और युवाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष जारी रहेगा और शहीदों के आदर्शों को जन-जन तक पहुंचाया जाएगा। इस मौके पर जिला उपाध्यक्ष अमित हाटिया, आर्यन मंडलोई, धीरज वर्मा, योगेश सोनी समेत अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

भोपाल में बिहार दिवस पर सजी सांस्कृतिक महफिल, लिट्टी-चोखा से लेकर मधुबनी पेंटिंग तक दिखी विरासत की झलक

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

बिहार दिवस के अवसर पर राजधानी में सांस्कृतिक रंगारंग आयोजन हुआ, जिसमें सुप्रसिद्ध लोकगायक सत्येंद्र कुमार 'संगीत' ने अपनी टीम के साथ पारंपरिक बिहारी लोकगीतों की प्रस्तुति देकर माहौल को जीवंत बना दिया। कार्यक्रम का आयोजन शनि मंदिर प्रांगण, बाग सेवनिया में बिहार फाउंडेशन के भोपाल चैप्टर के तत्वावधान में किया गया।

इस मौके पर बिहार फाउंडेशन ने मध्यप्रदेश में अपने नए चैप्टर की औपचारिक स्थापना भी की। आयोजन में बिहार की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित किया गया, जिसमें लोकगीत, पारंपरिक कला और व्यंजनों की विशेष झलक देखने को मिली। कार्यक्रम में अध्यक्ष आरएमपी सिंह, उपाध्यक्ष राजेश्वर मुकेश सिंह, सचिव संतोष कुमार कुंवर, सह सचिव योगेंद्र प्रसाद सिंह, कोषाध्यक्ष कुंवर प्रसाद, सह कोषाध्यक्ष कमलेश पंडित, विमल कुमार सिंह, अभिरंजन कुमार सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे। मंच संचालन विकास यादव ने किया।

आयोजन में बिहार के प्रसिद्ध व्यंजन

लिट्टी-चोखा, भुजा सहित कई पारंपरिक पकवानों के स्टॉल लगाए गए। साथ ही भागलपुर की सिल्क साड़ियां और मधुबनी पेंटिंग्स ने लोगों का विशेष ध्यान आकर्षित किया। पटना के लोकगायक सत्येंद्र कुमार 'संगीत' और उनकी टीम ने बिहारी संस्कृति से जुड़े लोकगीतों की प्रस्तुति देकर दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया।

बड़े जिलों में शराब से रेवेन्यू जुटाने आ रहा पसीना, भोपाल, जबलपुर, रतलाम, कटनी, शाजापुर, आलीराजपुर, दमोह, झाबुआ, नीमच में कम रेवेन्यू आया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

प्रदेश में बड़े जिलों में आगामी वित्त वर्ष के लिए शराब की नीलामी के लिए सरकार को मशक्कत करनी पड़ रही है। हालात यह हैं कि भोपाल, जबलपुर, रतलाम, कटनी, शाजापुर, आलीराजपुर, दमोह, नीमच और झाबुआ में रेवेन्यू कम आ रहा है। आबकारी मंत्री और डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा ने आबकारी अधिकारियों को इसमें सुधार करने के लिए कहा है। इसके साथ ही यह बात भी सामने आई है कि कम राजस्व वसूली वाले जिलों में इन्दौर 78 प्रतिशत, ग्वालियर 79 प्रतिशत, धार 76 प्रतिशत, शिवपुरी 80 प्रतिशत, रीवा 85 प्रतिशत, खण्डवा 82 प्रतिशत, अशोकनगर 82 प्रतिशत सिंगरौली 83 प्रतिशत और नर्मदापुरम 93 प्रतिशत राजस्व मिल चुका है।

उप मुख्यमंत्री देवड़ा ने कहा है कि जिन जिलों में राजस्व का लक्ष्य प्राप्त करना शेष है उनमें भोपाल, जबलपुर, रतलाम, कटनी, शाजापुर, आलीराजपुर, दमोह, नीमच और झाबुआ जिला शामिल हैं। इसलिए यहां विशेष प्रयास किए जाएं। उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने सोमवार को मंत्रालय में आबकारी वर्ष 2026-27 की व्यवस्थाओं समीक्षा की। वर्ष 26-27 के प्रदेश के सभी शराब दुकानों का ई-टेडर एवं ई टेंडर कम ऑक्सन के माध्यम से नीलाम करने का निर्णय लिया गया है।

वर्ष 2026-2027 के लिए शराब दुकानों की कीमतों में वर्ष 2025-26 के वार्षिक मूल्य से 20 प्रतिशत वृद्धि की गई है। आबकारी नीति के अनुसार इसी व्यवस्था पर शराब दुकानों के लिए वर्ष 2026-27 का आरक्षित मूल्य तय किया गया है। वर्ष 2026-27 के लिये शराब दुकानों से सरकार को 19 हजार 952 करोड़ की प्राप्ति होगी। अब तक कुल 6 चरणों में हुई शराब दुकानों के नीलामी से 11 हजार 827 का आबकारी राजस्व मिलना तय हुआ है, जो कि वर्ष 2025-26 वार्षिक मूल्य से 30 प्रतिशत अधिक है।

उप मुख्यमंत्री देवड़ा को बताया गया कि अब तक उमरिया, सीधी, शहडोल, मंडला, डिण्डोरी, खरगौन आदि जिले सौ प्रतिशत राजस्व के लिए नीलाम हो चुके हैं। कम राजस्व वसूली वाले जिलों में इन्दौर 78 प्रतिशत, ग्वालियर 79 प्रतिशत, धार 76 प्रतिशत, शिवपुरी 80 प्रतिशत, रीवा 85 प्रतिशत, खण्डवा 82 प्रतिशत, अशोकनगर 82 प्रतिशत सिंगरौली 83 प्रतिशत और नर्मदापुरम 93 प्रतिशत राजस्व मिल चुका है।

जिन जिलों में राजस्व का लक्ष्य प्राप्त करना शेष है उनमें भोपाल, जबलपुर, रतलाम, कटनी, शाजापुर, आलीराजपुर, दमोह, नीमच और झाबुआ जिला शामिल हैं। उप मुख्यमंत्री देवड़ा ने इन जिलों पदस्थ जिला आबकारी अधिकारियों को विशेष प्रयास करने के लिये निर्देशित किया। समिति की बैठक में परिवहन मंत्री राव उदय प्रताप सिंह, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री संपतिया उइके उपस्थित थीं। साथ ही प्रमुख सचिव वाणिज्यिक कर, आबकारी आयुक्त एवं विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहें।

भोजपुरी समाज का चार दिवसीय चैती छठ पूजा नहाए खाए के साथ शुभारंभ

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोजपुरी एकता मंच के तत्वाधान में शीतल दास की बगिया कमला पार्क घाट पर इसका आयोजन होगा मंच के अध्यक्ष कुंवर प्रसाद ने बताया कि भोजपुरी समाज का लोक आस्था का महापर्व चैती छठ पूजा आगामी दिनांक पहला दिन नहाए खाए प्रारंभ हुआ दूसरे दिन 23 मार्च को खरना होगा तीसरे दिन 24 मार्च को डूबते हुए सूर्य भगवान को ऋतु फल ठेकुआ पकवान को बास सुप में सजा करके सभी व्रतधारी शीतल दास की बगिया कमलापार्क घाट पर कमर में पानी में खड़े होकर अर्ध अर्पित करेंगे पानी से चौथे दिन 25 मार्च को उगते हुए सूर्य भगवान को गाय के कच्चे दूध से अर्ध देकर व्रतधारी अपना व्रत का समापन करेंगे

क्लासरूम से पहाड़ तक, एडवेंचर का नया पाठःभोपाल से शुरू हुआ सेफ्टी और स्किल बेस्ड मॉडल, वैश्विक पहचान की तैयारी

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

देश में एडवेंचर टूरिज्म को नई ऊंचाइयों तक ले जाने की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए पर्यटन मंत्रालय और एडवेंचर टूर ऑपरेटर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने मिलकर राजधानी भोपाल में चार दिवसीय एडवेंचर गाइड ट्रेनिंग प्रोग्राम और राष्ट्रीय सेमिनार का सफल आयोजन किया। 17 से 20 मार्च तक चले इस कार्यक्रम में देशभर से नीति-निर्माता, विशेषज्ञ और पर्यटन क्षेत्र से जुड़े प्रतिनिधि शामिल हुए। कार्यक्रम के तहत ट्रेकिंग, माउंटेनियरिंग और वाटर-बेस्ड गतिविधियों से जुड़े 33 प्रतिभागियों को गहन प्रशिक्षण दिया गया। इसमें फर्स्ट एड, CPR, वाइल्डरनेस इमरजेंसी रिस्पॉन्स, रिस्क असेसमेंट और क्राइसिस मैनेजमेंट जैसे अहम विषयों पर प्रैक्टिकल और थ्योरी के जरिए ट्रेनिंग दी गई। प्रशिक्षण में मध्यप्रदेश पर्यटन बोर्ड और मध्यप्रदेश इको टूरिज्म डेवलपमेंट बोर्ड का भी सहयोग रहा।

कार्यक्रम के समापन पर "एडवेंचर स्ट्रैटेजी फॉर अ न्यू एरा" विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित हुआ। इसमें अजीत बजाज ने कहा कि एडवेंचर टूरिज्म दुनिया में तेजी से बढ़ने वाला सेक्टर है और भारत में रोजगार और क्षेत्रीय विकास की अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने 2034 तक भारत को दुनिया के टॉप-10 एडवेंचर टूरिज्म डेस्टिनेशन में शामिल करने का लक्ष्य रखा।

मुख्य वक्ता इलैयाराजा टी (पर्यटन सचिव) ने मध्यप्रदेश को उभरता हुआ एडवेंचर टूरिज्म हब बताते हुए कहा कि राज्य में इस क्षेत्र को संगठित और सुरक्षित बनाने के लिए संस्थागत सहयोग को और मजबूत किया जाएगा। उन्होंने ATOAI के साथ मिलकर नीति निर्माण और डेस्टिनेशन डेवलपमेंट पर काम करने की बात कही।

सेमिनार में अगले दशक की रणनीति विषय पर पैनल डिस्कशन हुआ, जिसमें डॉ. अरविंद अभय बेडेकर, एल. कृष्णमूर्ति और निरत भट्ट सहित कई विशेषज्ञ शामिल हुए। चर्चा में सुरक्षा मानकों को मजबूत करने, वैश्विक मानकों को अपनाने, AI और टेक्नोलॉजी के उपयोग तथा निवेश बढ़ाने जैसे मुद्दों पर फोकस रहा।

इस आयोजन में 80 से अधिक प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया, जिनमें टूर ऑपरेटर्स, एडवेंचर क्लब, ट्रेनिंग संस्थान और होटल इंडस्ट्री से जुड़े लोग शामिल रहे।

गतांक से आगे : लोक कल्याण हेतु दादाजी का अवतरण

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मूर्तियों में चैतन्यता का दिव्य अनुभव यह प्रसंग जून 2010 का है, जब दादाजी धाम मंदिर में देवप्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा का पावन कार्य संपन्न हो रहा था। इस अवसर पर शास्त्रोक्त विधि-विधान के अनुसार वेदपीठ के विद्वान ब्राह्मणों द्वारा जलाधिवास, अन्नाधिवास, फलाधिवास, शर्कराधिवास एवं वस्त्राधिवास जैसे विभिन्न आध्यात्मिक अनुष्ठान पूर्ण श्रद्धा और नियमों के साथ किए जा रहे थे। समूचा वातावरण वैदिक मंत्रों की ध्वनि से गूंजायमान था और हर ओर दिव्यता का अनुभव हो रहा था। प्रायः दोपहर का समय था। कुछ क्षणों के लिए ब्राह्मणजन विश्राम एवं चाय के लिए मंदिर से बाहर गए हुए थे। उसी समय मंदिर के गर्भगृह में मैं, गिरजेश, शिवरतन नामदेव, जीवन एवं श्री मामाजी उपस्थित थे और अपनी-अपनी मूर्तियों की सेवा, स्वच्छता एवं सज्जा में लगे हुए थे। इसी बीच एक अद्भुत घटना घटित हुई। पूज्य श्री दादाजी गुरुदेव (चुन्नीलाल नामदेव) तेज कदमों से गर्भगृह में पधारे। उनकी चाल सामान्य से भिन्न थी मानो उनके भीतर कोई दिव्य शक्ति प्रवाहित हो रही हो। उनका व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली प्रतीत हो रहा था, शरीर में असाधारण बल का आभास हो रहा था, और उनकी आँखों में एक अद्वितीय तेज एवं अलौकिक चमक स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

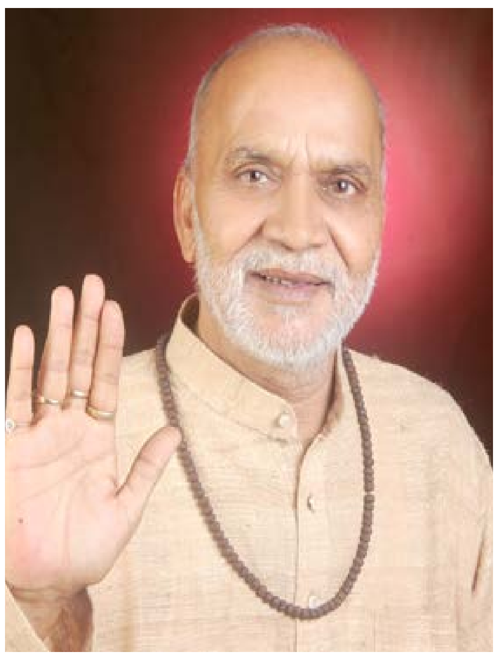

वे सर्वप्रथम भगवान श्री साईंनाथ जी की मूर्ति के समक्ष खड़े हुए। उन्होंने श्रद्धापूर्वक हाथ जोड़कर कुछ मंत्रोच्चार जैसा बुदबुदाया, तत्पश्चात अपनी दोनों हथेलियों को मूर्ति के चरणों से लेकर सिर तक धीरे-धीरे स्पर्श कराते हुए प्रणाम किया। यही क्रिया उन्होंने भगवान अर्धनारीश्वर की मूर्ति के समक्ष भी की। उस समय उपस्थित किसी भी व्यक्ति को यह समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा है। तभी अचानक मेरे मन में गुरुपूर्णिमा एवं जन्माष्टमी के वे पावन क्षण स्मरण हो आए, जब पूज्य बड़े दादाजी का दिव्य आवेश प्रकट होता था। उसी क्षण मेरे अंतर्मन से भाव प्रकट हुआ यह तो बड़े दादाजी का ही आवेश है।

तभी यह अनुभूति स्पष्ट हुई कि पूज्य श्री दादाजी ने अपने तप, साधना और दिव्य संकल्प शक्ति के द्वारा मंदिर की समस्त देवप्रतिमाओं में देवताओं का आवाहन कर उनमें चैतन्यता का संचार किया है। इस दिव्य घटना के पश्चात मंदिर का वातावरण और भी अधिक आध्यात्मिक एवं जीवंत हो गया। ऐसा अनुभव होने लगा मानो सभी देवप्रतिमाएं सजीव होकर भक्तों के साथ संवाद कर रही हों। मंदिर में उपस्थित प्रत्येक श्रद्धालु को एक अद्भुत शांति, आत्मिक सुख और दिव्य ऊर्जा की अनुभूति होने लगी।

आज भी जब कोई भक्त सच्चे मन, श्रद्धा और विश्वास के साथ इन चैतन्य मूर्तियों के समक्ष प्रार्थना करता है, तो उसे सकारात्मक परिणाम एवं मानसिक संतोष की अनुभूति अवश्य होती है। यह घटना इस बात का साक्षात प्रमाण है कि जब किसी महापुरुष की साधना, तपस्या और संकल्प शक्ति चरम पर होती है, तो वे न केवल स्वयं दिव्य होते हैं, बल्कि अपने आसपास के वातावरण और जड़ वस्तुओं को भी चेतन बना देते हैं। दादाजी धाम मंदिर आज केवल एक पूजा स्थल नहीं, बल्कि श्रद्धा, विश्वास और दिव्य अनुभूति का एक जीवंत केंद्र बन चुका है, जहाँ प्रत्येक आगंतुक को आत्मिक शांति और ईश्वरीय कृपा का अनुभव होता है।

कांग्रेसजनों ने शहीद दिवस पर भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को श्रद्धांजलि अर्पित की

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

देश के अमर शहीद एवं के बलिदान दिवस के अवसर पर हबीबगंज अंडरब्रिज एवं बरखेड़ा पठानी चौराहे स्थित उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें जिला कांग्रेस अध्यक्ष प्रवीण सक्सेना जी शामिल हुए श्रमिक कांग्रेस नेता दीपक गुप्ता ने कहा कि महान बलिदानियों को समय से पूर्व 23 मार्च 1931 को फांसी की सजा दे दी गई थी। श्रद्धांजलि कार्यक्रम में निकेश चौहान, शिवी शर्मा, मुजाहिद सिद्दीकी, टी आर गहलोत, सुशील प्रजापति, सतीश कनोजिया, वीरू लाहौरी सहित वरिष्ठ नेता,क्षेत्र के गणमान्य नागरिक, सामाजिक कार्यकर्ता एवं स्थानीय जनप्रतिनिधि शामिल हुए।

स्कंदमाता का पूजन एवं मंदिर में लाल रोशनी का आध्यात्मिक महत्व

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

रायसेन रोड स्थित पटेल नगर के जागृत एवं दर्शनीय तीर्थ स्थल दादाजी धाम मंदिर में चैत्र नवरात्रि पर्व अत्यंत श्रद्धा, विश्वास एवं धर्मभावना के साथ मनाया जा रहा है। नवरात्रि के पाँचवें दिन माँ स्कंदमाता की विधि-विधान से पूजा अर्चना संपन्न की गई।

माँ स्कंदमाता, भगवान कार्तिकेय (स्कंद) की माता हैं। इन्हें चार भुजाओं वाली देवी के रूप में वर्णित किया गया है दो हाथों में कमल पुष्प, एक हाथ में बाल रूप में भगवान स्कंद तथा एक हाथ वरद मुद्रा में रहता है। इनका वाहन सिंह है तथा ये कमल पर विराजमान रहती हैं, इसी कारण इन्हें 'पद्मासना देवी' भी कहा जाता है।

माँ स्कंदमाता ममता, वात्सल्य, करुणा एवं दिव्य प्रेम की साक्षात प्रतीक हैं। इनकी उपासना से संतान सुख की प्राप्ति, बच्चों की रक्षा, बुद्धि एवं विवेक की वृद्धि तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है। माँ की कृपा से जीवन के भय, कष्ट एवं बाधाएँ दूर होती हैं तथा मन को शांति, परिवार में सुख समृद्धि एवं हृदय की पवित्रता प्राप्त होती है।

चैत्र नवरात्रि के पाँचवें दिन, सोमवार को प्रातः 8:00 बजे पंडित जी के मार्गदर्शन में यजमान श्री राजेंद्र चक्रवर्ती एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रेखा चक्रवर्ती द्वारा श्रद्धापूर्वक एवं विधि-विधान से माँ स्कंदमाता का पूजन संपन्न किया गया।

इस अवसर पर मंदिर में लाल रोशनी (लाल प्रकाश) का विशेष महत्व बताया गया। लाल रंग शक्ति, ऊर्जा, उत्साह एवं माँ भगवती की दिव्य शक्ति का प्रतीक है। मंदिर में लाल प्रकाश की स्थापना माँ स्कंदमाता की कृपा, सकारात्मक ऊर्जा एवं आध्यात्मिक वातावरण को जागृत करने का माध्यम मानी जाती है, जिससे भक्तों को विशेष आशीर्वाद एवं आंतरिक शांति की

साहित्य अकादमी पुरस्कारः कृति बनाम रचनाकार की बहस

चयन प्रक्रिया और उपेक्षित उत्कृष्ट कृतियों पर आवश्यक पुनर्विचार

कमलाकर सिंह

साहित्य अकादमी पुरस्कार को लेकर उठती बहस केवल एक लेखक या कृति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हिंदी साहित्य में सम्मान की कसौटियों, चयन प्रक्रिया की पारदर्शिता और समय पर मूल्यांकन जैसे व्यापक प्रश्नों को सामने लाती है। इन दिनों ममता कालिया को उनके संस्मरणात्मक लेखन 'जीते जी इलाहाबाद' पर मिले साहित्य अकादमी पुरस्कार की चर्चा व्यापक रूप से हो रही है। अखबारों, सोशल मीडिया विशेषकर फ़ेसबुक, पर इसको लेकर तरह-तरह की प्रतिक्रियाएँ सामने आई हैं। एक व्यंग्यात्मक टिप्पणी, "आखिर मिल ही गया ममता कालिया को साहित्य अकादमी पुरस्कार" ने इस बहस को और तीखा बना दिया। यह प्रश्न स्वाभाविक है कि किसी लेखक को पुरस्कार मिलने पर इस तरह की प्रतिक्रिया क्यों उत्पन्न होती है। यह भी कहा जा रहा है कि उन्हें यह पुरस्कार बहुत पहले मिल जाना चाहिए था। कुछ लोगों ने तो उनकी समग्र रचनात्मकता को ही औसत बताया । इन बातों पर मैं कोई टिप्पणी नहीं करता, परंतु बड़ा प्रश्न यह है कि इस पुरस्कार का आधार लेखक होता है या कृति? हिंदी साहित्य में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जहाँ महत्त्वपूर्ण रचनाकारों को समय रहते सम्मान नहीं मिला। रमेश चंद्र शाह और रमेश कुंतल मेघ के संदर्भ में यह बात कही जाती रही है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जैसे महान रचनाकार को उनके जीवनकाल में यह सम्मान नहीं मिला, और धर्मवीर भारती जैसे महत्वपूर्ण साहित्यकार भी इससे वंचित रह गए। यह स्थिति पुरस्कार-प्रक्रिया के मानदंडों पर पुनर्विचार की माँग करती है। हिंदी जैसी विशाल भाषा, जिसके करोड़ो पाठक हैं, उसमें यदि पुरस्कारों की संख्या और संरचना सीमित रहेगी तो अनेक योग्य रचनाकार अनदेखे रह जाएँगे। ऐसे में

विभिन्न विधाओं के लिए पृथक पुरस्कारों की व्यवस्था एक सार्थक विकल्प हो सकता है। यह भी देखा गया है कि कई महत्त्वपूर्ण कृतियाँ समय पर सम्मान से वंचित रह जाती हैं, जबकि कभी-कभी कम प्रभावी रचनाएँ भी पुरस्कृत हो जाती हैं। इसलिए आवश्यक है कि साहित्य अकादमी अपनी चयन-प्रक्रिया और ज्यूरी संरचना को अधिक लोकतांत्रिक और समावेशी बनाए, ताकि हाशिए पर छूटते हुए लेखकों को भी समान अवसर मिल सके। यह पुरस्कार केवल सम्मान का प्रतीक नहीं, बल्कि भारतीय भाषाओं की समृद्ध परंपरा, सांस्कृतिक चेतना और बौद्धिक प्रवाह को सामने लाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

इसी संदर्भ में आनंद कुमार सिंह की काव्यकृति 'अथर्वा मैं वही वन हूँ' विशेष ध्यान आकर्षित करती है जो साहित्य अकादमी की विचारणीय सूची में शीर्ष पर थी। वर्ष 2021 में प्रकाशित यह कृति अल्प समय में ही हिंदी-जगत में व्यापक विमर्श का केंद्र बन गयी। अशोक वाजपेयी जी ने 28 नवंबर 2021 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में कृति के लोकार्पण समारोह में, जहाँ मैं उपस्थित था, कहा था-" कविता में भाषा का एक काम यह है कि वो वहाँ ले जाए जहाँ पहले कविता कभी न गयी हो, न भाषा कभी गयी हो। मेरे हिसाब से इस पुस्तक की एक प्रशस्ति ये हो सकती है कि इसने भाषा और कविता दोनों को वहाँ ले जाने की कोशिश की है जहाँ कम से कम पिछले पचास वर्षों में हिंदी कविता नहीं गयी है।"

अनेक विश्वविद्यालयों में इस पर शोध हो रहे हैं तथा आलोचनात्मक ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। किसी काव्यकृति के प्रकाशन के कुछ वर्षों के भीतर इस प्रकार की बौद्धिक सक्रियता कम ही देखने को मिलती है। यह कृति समकालीन हिंदी साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेप है। ऐसे समय में जब गंभीर साहित्य के लिए पाठकीय आधार सिकुड़ता प्रतीत होता है, यह कृति एक नयी संभावना का संकेत देती है।

आनंद कुमार सिंह की यह कृति उनकी छब्बीस वर्षों की साधना का परिणाम है, जो अपने समय की आलोचना करते हुए भारतीय ज्ञान-परंपरा का काव्यात्मक पुनर्पाठ प्रस्तुत करती है। उनकी अन्य कृतियाँ—'सौंदर्य जल में नर्मदा' और 'विवेकानंद'—भी इस सृजनात्मक ऊँचाई की पुष्टि करती हैं। 'अथर्वा मैं वही वन हूँ मुक्त छंद में महाकाव्य की रचना को संभव बनाती है और हिंदी के लिए एक गौरवग्रंथ के रूप में उपस्थित है।

साहित्य किसी भी सभ्यता की आत्मा होता है। आज जब समाज तीव्र गति से तकनीक-निर्भर होता जा रहा है, साहित्य की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। वर्ष 2025 का साहित्य अकादमी पुरस्कार ममता कालिया को मिला, यह स्वागतयोग्य है; किन्तु अब कृति पर गंभीरता से विचार होना चाहिए, जो अपने समय को अभिव्यक्त करने के साथ-साथ साहित्य को नयी दिशा देने की क्षमता रखती है।

-(लेखक भोज विश्व विश्विद्यालय के पूर्व कुलपति है)

यूपीएससी सिलेक्ट कैंडिडेट्स से छात्रों ने लिए जवाब

छात्र ने पूछा, प्रीलिम्स क्लियर नहीं हो रहा है; अभ्यर्थी का जवाब- स्मार्ट स्टडी की जरूरत, एआई की लें मदद

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में शनिवार को संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) में चयनित अभ्यर्थियों के सम्मान में 'सफलता के मंत्र' कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मौजूदगी में 61 सफल अभ्यर्थियों की उपलब्धियों को सम्मानित किया गया। विभिन्न कॉलेजों से आए छात्र-छात्राओं ने "आंसर राइटिंग कैसे सुधारें?", "प्रीलिम्स कैसे क्लियर करें?" और "जॉब के साथ तैयारी कैसे करें?" जैसे सवाल पूछे।

तनविषा तिवारी के सवाल पर अभ्यर्थी ने बताया कि आंसर राइटिंग के दो मुख्य घटक होते हैं, कंटेंट और प्रस्तुति। कंटेंट स्टडी मटेरियल और क्लास से विकसित हो जाता है, लेकिन प्रस्तुति के लिए उन्होंने ए4 शीट को दो हिस्सों में बांटकर अभ्यास किया। बाएं हिस्से में पॉइंटर बेस्ड उत्तर और दाएं हिस्से में वैल्यू एडिशन लिखते थे, जिससे 7 मिनट का उत्तर 4 मिनट में लिख पाते थे। कुणाल वर्मा के प्रीलिम्स संबंधी प्रश्न पर अभ्यर्थी ने कहा कि उन्होंने भी कई प्रयास दिए। सीमित स्रोतों को बार-बार रिवाइज किया, नियमित मॉक टेस्ट दिए और 2011 से लेकर अब तक के PYQ हल किए। गलत उत्तरों के साथ-साथ सही उत्तरों का भी विश्लेषण किया और AI की मदद से अपने उत्तरों को बेहतर बनाया।

अक्षांश सिंह कुशवाहा के टालमटोल वाले सवाल पर श्रेयांश बदोरिया (194वीं रैंक) ने कहा कि कठिन विषयों को समय देना चाहिए। जब पढ़ाई में मन न लगे तो रुचिकर या आसान विषयों से शुरुआत करें। खाली समय में वे जियोग्राफी की मैपिंग प्रैक्टिस करते थे।

आरुषि पगारे के स्वास्थ्य से जुड़े प्रश्न पर दीक्षा चौरसिया (44वीं रैंक) ने कहा कि रोजाना कम से कम एक घंटे फिजिकल एक्टिविटी जैसे दौड़ना या खेलना जरूरी है। मानसिक स्वास्थ्य के लिए यह समझना चाहिए कि यह परीक्षा जीवन का एक हिस्सा है, अंत नहीं। पढ़ाई को बोझ न मानें और बीच-बीच में ब्रेक लेते रहें। परिधि सोनी के सवाल पर सोफिया सिद्दीकी (253वीं रैंक) ने बताया कि जॉब के साथ तैयारी के लिए सिलेबस को छोटे-छोटे हिस्सों में बांटना जरूरी है। समय सीमित होता है, इसलिए PYQ एनालिसिस के आधार पर सीमित और सटीक तैयारी करनी चाहिए। अंजुल सेन के हिंदी माध्यम से जुड़े सवाल पर प्राची चौहान (260वीं रैंक) ने कहा कि यह रास्ता थोड़ा कठिन जरूर है, लेकिन असंभव नहीं। उन्होंने खुद हिंदी माध्यम से सफलता हासिल की है। संसाधनों के लिए अधिक मेहनत करनी पड़ती है, लेकिन मेहनत करने वालों के लिए माध्यम मायने नहीं रखता। सिद्धांत यादव के अनुशासन और निरंतरता के सवाल पर आयुषी गुप्ता (947वीं रैंक) ने कहा कि सिलेबस को छोटे हिस्सों में बांटकर रोज का लक्ष्य तय करें। लगातार पढ़ाई करने से कुछ ही महीनों में सिलेबस पूरा हो जाता है और निरंतरता ही सफलता की कुंजी है।

भारतीय ज्ञान परंपराः पहले बड़े भवन नहीं थे

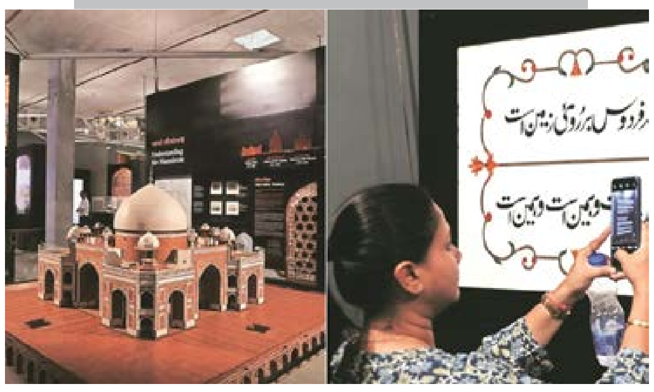

आजकल भारतीय ज्ञान परंपरा की खूब चर्चा हो रही है। इस पर गोष्ठियों, भाषणों एवं लेखों की विपुलता देखी जा सकती है। हालांकि इस परंपरा की चर्चा और उसको पुनर्जीवित करने की पहल स्वतंत्रता के बाद ही हो जानी चाहिए थी, पर हुआ नहीं। ऐसा नहीं होने का कारण था बौद्धिक और राजनीतिक, दोनों ही सत्ता पर यूरोप की संस्कृति, विचार और जीवन दर्शन से प्रभावित लोगों का दबदबा। इसलिए उनके ज्ञान के हम व्याख्याकार मात्र बने रहे और उसे अपने संदर्भों में ढालने के प्रयास को ही हम अपनी मौलिकता मानते रहे। हमारी कल्पनाओं में यूरोप बैठा दिया गया। भारतीय ज्ञान परंपरा का पहला कदम कल्पनाओं से यूरोप के जीवन दर्शन और मूल्यों को निकालना है। इसलिए इन गोष्ठियों और विमर्शों की निश्चित भूमिका है। मगर इस वैचारिक पहल से भारत के मार्क्सवादी पूरी तरह से अलग हैं। जिस किसी ने भी प्राचीन भारत को सम्मानित स्थान देने का प्रयास किया, वे उनके कोपभाजक बने। उदाहरणार्थ हिंदी के विद्वान रामविलास शर्मा ने जब भारतीय संस्कृति को केंद्रीय स्थान दिया, तब उन्हें अवांछित घोषित कर दिया गया था। वर्ष 2014 में नई शिक्षा पद्धति ने भारतीय ज्ञान परंपरा को लोक विमर्श का विषय बना दिया। ऐसा प्रोत्साहन आधुनिक भारत के इतिहास में इसे और इसकी पैरोकारी करने वालों को कभी भी नहीं मिला था। पर भारत की ज्ञान परंपरा का महत्त्व मार्क्सवाद या नेहरूवाद की जय-पराजय में नहीं देखा जाना चाहिए। इस परंपरा की एक विशिष्टता प्रतिकूल विचारों के साथ तर्क करना है। यही शास्त्रार्थ के नाम से प्रचलित और प्रसिद्ध हुआ करता था। इसलिए इसके लिए भावना से कहीं अधिक विवेकवाद का होना जरूरी होता है, लेकिन विवेकवाद को खतरा वैचारिक अवसरवादियों से होता है। बौद्धिक सत्ता पर जिसका भी नियंत्रण होता है, अवसरवादियों का झुंड उधर ही मुंह कर लेता है। वे विचारों की ताली बजाते हैं। जब वामपंथ मजबूत था, तब बौद्धिक भीड़ वहां सबसे अधिक थी। इसलिए यह भीड़ किसी वैचारिक सत्ता का सारथी नहीं हो सकती। इसी भीड़ से भारत की ज्ञान परंपरा को भी बचना है। भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित करने का मतलब सृजनशीलता और लेखनी तथा अभिव्यक्ति में मौलिकता पैदा करना है। इसी में स्थापित विचारों, परंपराओं और सोच को झकझोर देने की क्षमता होती है। जो बौद्धिक काम पिछली शताब्दियों में हुआ, उसकी छाया तक अभी नहीं है। इसके लिए तप, साधना और गैर भौतिकतावादी बने रहने की जरूरत है। इसे समझने के लिए बहुत पीछे जाने की जरूरत नहीं है।

भरोसे में लगी सेंध!

हालिया घटनाओं से एचडीएफसी बैंक की पारदर्शिता पर गहरे सवाल उठे हैं। चेयरमैन के इस्तीफे और तीन अधिकारियों की बर्खास्तगी के बाद लोगों के मन में अनेक संदेह तैर रहे हैं। इन्हें दूर करने का विश्वसनीय प्रयास अविलंब किया जाना चाहिए।अंदेशा है कि मार्केट कैपिटलाइजेशन, ग्राहक आधार, और शाखा नेटवर्क के लिहाज़ से भारत में प्राइवेट सेक्टर के सबसे बड़े बैंक एचडीएफसी की साख पर उठे सवाल देश की वित्तीय अर्थव्यवस्था पर दूरगामी असर छोड़ सकते हैं। इसलिए इस बारे में पूरी पारदर्शिता बरतते हुए बैंक के सभी हितधारकों सहित पूरे देश को भरोसे में लिया जाना चाहिए। इस समय जबकि देश अंदरूनी एवं अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के कारण गंभीर आर्थिक चुनौतियों के मुकाबिल है, बैंकिंग सेक्टर से जुड़ी एक अतिरिक्त समस्या का बोझ उठाने की स्थिति में वह नहीं होगा। बैंक के चेयरमैन अतनु चक्रवर्ती ने पिछले हफ्ते अपने पद से इस्तीफा देते हुए कहा कि इस संस्था के अंदर देखी गई कुछ "प्रथा और घटनाएं" उनकी अपनी व्यक्तिगत नैतिकता से मेल नहीं खातीं। हालांकि उन्होंने बैंक के भीतर कोई ठोस समस्या होने से इनकार किया और फुर्ती दिखाते हुए भारतीय रिजर्व बैंक ने भी बैंक की वित्तीय स्थिति को लेकर लोगों को आश्वस्त करने की कोशिश की, मगर बाद की घटनाओं से साफ है कि उससे बात नहीं बनी है। "नैतिक" कारणों से चेयरमैन के इस्तीफा देने से साफ संकेत मिला कि बैंक का संचालन सही तरीके से नहीं हो रहा है। फिर दो दिन बाद ही बैंक ने अपने तीन वरिष्ठ अधिकारियों को बर्खास्त कर दिया। उन पर एटी-1 बॉन्ड्स की अनुचित ढंग से बिक्री का आरोप लगाया गया है। मतलब यह कि जो बॉन्ड सुरक्षित निवेश बताकर बेचे गए, वे बाद में जोखिम भरे साबित हुए। एटी-1 उच्च जोखिम वाले बॉन्ड होते हैं, जिन्हें बैंकों की पूंजी संरचना मजबूत करने के लिए जारी किया जाता है। फिर इस घटनाक्रम के दौरान इस ओर भी ध्यान गया है कि बैंक में पिछले दो वर्षों में कम-से-कम छह वरिष्ठ अधिकारियों ने इस्तीफा दिया या बैंक से उनका संबंध विच्छेद हुआ। स्पष्टतः ये घटनाएं बैंक की पारदर्शिता पर सवाल उठाती है। इसीलिए चक्रवर्ती के इस्तीफे के बाद से बैंक के शेयरों में लगातार गिरावट दर्ज की गई। तो साफ है कि निवेशकों सहित अन्य हितधारकों के मन में अनेक संदेह तैर रहे हैं। इन्हें दूर करने का विश्वसनीय प्रयास अविलंब किया जाना चाहिए।

तेल-गैस में निजी कंपनियों की एंट्री अब जरूरी!

तो अब क्या होगा? जिस युद्ध के काले बादल ईरान और खाड़ी के देशों पर छाए हुए हैं, वे धीरे-धीरे हमारी तरफ आ रहे हैं और हम उनको देख कर सिर्फ चिंता कर सकते हैं। और कुछ नहीं। न हमारा इस युद्ध में कोई हाथ था, न हार और जीत से हमारा कोई वास्ता है, लेकिन जैसे-जैसे काले बादल हमारी तरफ आ रहे हैं, हमारी चिंताएं बढ़ रही हैं। इनमें सबसे बड़ी है कच्चे तेल के बढ़ते दाम की चिंता। तीन सप्ताह ही हुए हैं अभी युद्ध के और तेल की कीमत दुगनी हो चुकी है। भारत जैसे देश के लिए मुसीबतों का पहाड़ टूट सकता है, अगर युद्ध लंबा चलता है। सबसे बड़ी मुसीबत यही है कि हम कुछ नहीं कर सकते हैं इस युद्ध को रोकने के लिए। सच यह है कि जब अयातुल्ला खामेनेई की हत्या की खबर मिली मुझे, बुरा नहीं लगा। मेरी नजर में मातम नहीं मनाया जाना चाहिए। भारत के शिया मुसलमानों ने खूब मातम किया अयातुल्ला के मारे जाने के बाद, बिना यह सोचे कि जिस नेता ने हजारों की तादाद में अपने ही लोग मारे हों, उसके लिए आंसू बहाना गलत ही है। जिस व्यक्ति ने अपने ही देश को एक खुली जेल बना दिया हो, उसको संत किसी हाल में नहीं कहा जा सकता है। जब इस्लामी क्रांति शुरू हुई थी ईरान में कोई पचास साल पहले, उस देश की प्राचीन सभ्यता को नष्ट कर इस्लाम थोपा गया है लाखों लोगों पर इतनी कठोरता के साथ कि जिन बहादुर नागरिकों ने अत्याचार के खिलाफ बोलने की हिम्मत दिखाई, उनकी सजा मौत होती थी। पिछले सप्ताह तीन नौजवानों को फांसी दी गई युद्ध के बीच। स्पष्ट है कि न तो डोनाल्ड ट्रंप के पास कोई सोची-समझी रणनीति थी और न नेतन्याहू के पास। वे आसमान से मौत बरसाते गए, बिना यह सोचे कि ईरान के पास भी अपने बचाव के लिए ठोस साजो-सामान होंगे। इन दिनों ट्रंप रोज कहते हैं कि वे युद्ध जीत चुके हैं, लेकिन साथ में होर्मुज जलमार्ग को खुलवाने के लिए सहायता भी मांगते फिर रहे हैं नाटो से। यहां तक कि चीन से भी। क्या उनको मालूम नहीं था कि इस छोटे से समुद्री मार्ग से आता है विश्व का बीस फीसद से ज्यादा कच्चा तेल?

क्या मालूम नहीं था इन महारथियों को कि होर्मुज जलमार्ग पर ईरान का पूरा नियंत्रण है और जब चाहे वह जहाजों का यहां से आना-जाना बंद कर सकता है? ऐसा अब हो रहा है। पूरी दुनिया देख रही है। ऐसा चलता रहा, तो सबसे ज्यादा नुकसान होगा भारत का। इस रास्ते से आता है हमारा तेल और गैस भी। गैस की दुकानों के सामने लंबी कतारें लगने लग गई हैं अभी से। महाराष्ट्र के जिस गांव में मैं यह लिख रही हूं, वहां गैस की इतनी कमी है कि सिलेंडर की बुकिंग महीना पहले करनी पड़ती है।

ऐसा कहने के बाद यह भी कहना जरूरी है कि इस युद्ध से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। गलत नीतियों के कारण हमारे राजनेताओं ने निजी कंपनियों को तेल और गैस की खोज से बाहर रखा है। यह काम सिर्फ सरकारी कंपनियां ही करती रहीं दशकों तक। अगर निजी कंपनियों को बहुत पहले इस क्षेत्र में आने की इजाजत मिली होती, तो आज हम ऊर्जा के लिए दूसरे देशों पर इतना निर्भर नहीं होते। सो पहला सबक यह लेना चाहिए हमारे शासकों को कि तेल और गैस के क्षेत्रों के लिए निजी कंपनियों का आना अब जरूरी हो गया है।

इसी तरह, राजनीतिक सबक भी लेना चाहिए। पिछले सप्ताह मैंने जब अमेरिका की राष्ट्रीय जांच एजेंसी की मुखिया तुलसी गबार्ड से पूछताछ देखी सीनेट की समिति द्वारा, तो हैरान रह गई। इस आला अधिकारी से बार-बार पूछा गया कि राष्ट्रीय जांच संस्था की मुखिया होने के नाते क्या उनको ईरान से कोई परमाणु खतरा दिखा था! अगर नहीं दिखा था, तो उन्होंने राष्ट्रपति ट्रंप को बताया क्यों नहीं कि युद्ध की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्होंने अपनी सफाई में सिर्फ यह कहा कि खतरा कितना है, उसका फैसला सिर्फ राष्ट्रपति कर सकते हैं, लेकिन बार-बार उनको याद दिलाया समिति के सदस्यों ने कि यह काम उनका है, किसी और का नहीं। काश कि हमारे देश में भी आला अधिकारियों की इस तरह खिंचाई हो, जब वे अपनी जिम्मेदारियों से भागते हैं।

तो अब क्या कर सकता है भारत? विनम्रता से यहां कहना चाहूंगी कि इस समय हमारे आला राजनेताओं की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है कि वे युद्ध के दोनों पक्षों के साथ अच्छे रिश्ते बनाए रखें। रही बात हमारी अंदरूनी समस्याओं की, तो यही समय है अच्छी आर्थिक नीतियां बनाने का, ताकि वास्तव में 'ईज आफ डूइंग बिजनेस' वाला नारा जमीन पर उतरता देख सकें हम। फिलहाल प्रधानमंत्री का यह नारा खोखला है इतना कि विदेशों से कोई छोटी-मोटी चीज निर्यात करने में इतनी तकलीफ होती है कि लोग कोशिश तक नहीं करते हैं।

मेरे कुछ दोस्त हैं जो भारत में बनाए फर्नीचर का निर्यात करते हैं और उनके सामने इतनी मुसीबतें खड़ी होती हैं कि उन्होंने तकरीबन निर्यात करना बंद कर दिया है। अगर प्रधानमंत्री चाहते हैं कि अर्थव्यवस्था इतनी मजबूत हो कि इस युद्ध का बुरा असर न पड़े, तो उनको अपने अधिकारियों को नियंत्रण में रखना होगा सख्ती से। इस युद्ध ने यह भी मौका दिया है हमें कि देश के अंदर बुनियादी ढांचे में जो खामियां हैं, उसकी दृढ़ता से हम मरम्मत करें। युद्ध स्तर पर अगर हम ये काम करेंगे, तो संभव है कि इस जंग का बुरा असर हमारे देश के अंदर कम पड़ेगा।

क्यों एचपीवी वैक्सीन के दुष्प्रभावों को छिपाया!

पुस्तक के दावे के अनुसार वैक्सीन के छुपे नुकसान सोशल मीडिया या एंटी-वैक्सीन ग्रुप्स में फैल सकते हैं, जिससे हिचकिचाहट बढ़ सकती है। खासकर 2010 के ट्रायल विवाद के बाद। लेकिन भारत में मुख्यधारा मीडिया और स्वास्थ्य विभाग इसे 'मिथ' बताते हुए प्रमोशन जारी रखते हैं। अगर अमरीका में हुए मुकदमे को केंद्र में रखा जाए तो ज्यादा सुर्खियां बन सकती हैं जिससे इस पर प्रभाव बढ़ सकता है। कुछ दिनों से सोशल मीडिया पर महिलाओं के स्वास्थ्य को लेकर एक पोस्ट काफ़ी चर्चा में छाई हुई है। इसमें पीटर गोट्शे नामक एक प्रसिद्ध चिकित्सक, शोधकर्ता और लेखक, ने 'हाउ मर्क एंड ड्रग रेगुलेटर्स हिड सीरियस हार्म्स ऑफ एचपीवी वैक्सीन' नाम की पुस्तक का विश्लेषण कर कुछ गंभीर सवाल उठाए गए हैं। इस पोस्ट में पीटर द्वारा किए गए दावा ज़िक्र किया गया है कि कैसे महिलाओं में होने वाले सर्वाइकल कैंसर को रोकने वाली एक वैक्सीन के दुष्प्रभावों को दुनिया से छिपाया गया है। पोस्ट के अनुसार पीटर गोट्शे की पुस्तक में वे बताते हैं कि कैसे 'एचपीवी क्सीन' को 'लाइफ-सेविंग' बताकर बेचा गया, लेकिन इसके ट्रायल्स में गंभीर कमियां थीं और नुकसान छुपाए गए। यह मर्क की वैज्ञानिक दुराचार की कहानी है, जो कभी-कभी फ्रॉड के स्तर तक पहुंचती है। गोट्शे के अनुसार, मर्क ने कई तरीकों से गार्डासिल के नुकसानों को छुपाया। ज्यादातर ट्रायल्स में सच्चा प्लेसिबो (सलाइन) नहीं इस्तेमाल किया गया। इसके बजाय एल्यूमिनियम एडजुवेंट या दूसरी वैक्सीन को 'प्लेसिबो' बताया गया। ये दोनों खुद नुकसान पहुंचा सकते हैं (न्यूरोटॉक्सिक), इसलिए वैक्सीन और 'प्लेसिबो' के साइड इफेक्ट्स समान दिखे और नुकसान 'सुरक्षित' साबित हुआ। लेखक कहते हैं कि इससे मेडिकल एथिक्स का उल्लंघन हुआ। वहीं दूसरी ओर गंभीर न्यूरोलॉजिकल समस्याएं जैसे POTS (Postural Orthostatic Tachycardia Syndrome—खड़े

होते ही चक्कर और दिल की धड़कन तेज होना) और CRPS (Complex Regional Pain Syndrome—तीव्र दर्द और सूजन) को रिपोर्ट नहीं किया गया। केवल 14 दिनों के अंदर की घटनाएं गिनी गईं, जबकि 90% नुकसान इससे बाहर थे। कई केसों को 'कोई संबंध नहीं' बता दिया गया या बाहर कर दिया गया। गोट्शे इसे 'आउटराइट फ्रॉड' कहते हैं। उल्लेखनीय है कि वैक्सीन को सर्वाइकल कैंसर रोकने वाला बताया गया, लेकिन गोट्शे दावा करते हैं कि ट्रायल्स में असली कैंसर केस शून्य थे। लंबे समय के डेटा में एंटीबॉडी स्तर तेजी से गिरता है और पहले से एचपीवी संक्रमित महिलाओं में कैंसर का खतरा बढ़ सकता है। ऑस्ट्रेलिया या डेनमार्क में ऑब्जर्वेशनल स्टडीज में कैंसर घाटे को वैक्सीन का श्रेय दिया जाता है, लेकिन स्क्रीनिंग और अन्य फैक्टर्स को नजरअंदाज किया जाता है। पुस्तक के अनुसार मर्क ने ऐसा डर फैलाया कि "कैंसर हजारों महिलाओं को मारता है", हर राज्य में लॉबिंग की और स्कूल मैंडेट के लिए दबाव डाला। इस वैक्सीन को 'फास्ट-ट्रैक अप्रूवल' मिला, जबकि FDA ने बाद में माना कि सेफ्टी मॉनिटरिंग की क्षमता को ध्यान में नहीं रखा गया था। इसके साथ ही FDA, EMA जैसे नियामकों की भूमिका भी संदेहास्पद रही। पुस्तक में ये आरोप भी लगाया गया है कि इन नियामकों ने मर्क के एकतरफा रिपोर्ट्स को बिना सवाल स्वीकार किया। EMA की 2015 जांच में भी कंपनियों के डेटा पर भरोसा किया गया। गोट्शे कहते हैं कि रेगुलेटर्स इंडस्ट्री द्के क़ब्ज़े में हैं। पुस्तक में Vioxx घोटाले की तुलना भी की गई है। लेखक अन्य देशों के स्वास्थ्य अधिकारियों के भ्रामक बयानों के उदाहरण भी देते हैं। दुनिया भर के विश्लेषक इस पुस्तक की ताकत का वर्णन करते हुए इसे गोपनीय आंतरिक दस्तावेजों पर आधारित मानकर जर्नल पेपर्स से ज्यादा विस्तृत मानते हैं। इस पुस्तक के छपने का सबसे प्रभावी असर यह है कि यह पारदर्शिता की मांग करता है और कानूनी मुकदमों (जैसे Robi केस, जो 2025 में चल रहा था) में सच्चाई उजागर होने का उदाहरण भी देता है। ब्राउनस्टोन इंस्टीट्यूट जैसे समीक्षक इसे 'फियरलेस इंडिक्टमेंट' कहते हैं। गौरतलब है कि गोट्शे को ब्रिटिश मेडिकल शोध संस्थान कोक्रेन से निकाला गया था क्योंकि उन्होंने 2018 में एचपीवी वैक्सीन रिव्यू पर इसी तरह की आलोचना की थी। वहीं WHO, CDC, Cochrane जैसे मुख्यधारा के शोध संस्थान का मानना है कि वैक्सीन प्री-कैंसरस लेशन्स 80-90% तक कम करती है, असरदार है और गंभीर साइड इफेक्ट्स बहुत दुर्लभ हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के VigiBase में 667 मौतें रिपोर्ट हुई हैं, लेकिन कारण संबंध साबित नहीं। गोट्शे की व्याख्या को 'anti-vax' माना जाता है, हालांकि वे खुद वैक्सीन के खिलाफ नहीं बल्कि 'ट्रांसपेरेंसी' के पक्षधर हैं। भारत में इस पुस्तक का सीधा और व्यापक प्रभाव अभी तक दिखाई नहीं देता। 2026 तक के उपलब्ध डेटा में कोई बड़ा मीडिया बहस या सरकारी प्रतिक्रिया नहीं मिली। लेकिन यह अप्रत्यक्ष रूप से प्रासंगिक है क्योंकि 2009-2010 में PATH (बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन) के साथ मर्क के गार्डासिल और GSK के Cervarix ट्रायल्स आंध्र प्रदेश और गुजरात में चले जहाँ 7 लड़कियों की मौत हुई, जिसके बाद संसदीय समिति ने नैतिक उल्लंघन (इनफॉर्म्ड कंसेंट के बिना गरीब लड़कियों पर प्रयोग) का आरोप लगाया। ट्रायल्स रोके गए। यह विवाद आज भी HPV वैक्सीन पर शक पैदा करता है। उल्लेखनीय है कि भारत सर्वाइकल कैंसर खत्म करने के लिए HPV वैक्सीन को स्कूल प्रोग्राम में ला रहा है, जिसकी शुरुआत सिक्किम, पंजाब आदि में राष्ट्रीय रोलआउट की योजना के तहत की जा सकती है। इंडिजिनस Cervavac भी उपलब्ध है, लेकिन क्वाड्रिवेलेंट वैक्सीन (मर्क जैसी) भी इस्तेमाल होती है। भारत सरकार का स्वास्थ्य मंत्रालय इसे सुरक्षित और जरूरी बताती है।

कुल मिलाकर देखा जाए तो पुस्तक के दावे के अनुसार वैक्सीन के छुपे नुकसान सोशल मीडिया या एंटी-वैक्सीन ग्रुप्स में फैल सकते हैं, जिससे हिचकिचाहट बढ़ सकती है। खासकर 2010 के ट्रायल विवाद के बाद। लेकिन भारत में मुख्यधारा मीडिया और स्वास्थ्य विभाग इसे 'मिथ' बताते हुए प्रमोशन जारी रखते हैं। अगर अमरीका में हुए मुकदमे को केंद्र में रखा जाए तो ज्यादा सुर्खियां बन सकती हैं जिससे इस पर प्रभाव बढ़ सकता है। परंतु, पुस्तक भारत में सतर्कता अवश्य बढ़ा सकती है लेकिन कार्यक्रम को नहीं रोक पाएगी, क्योंकि कैंसर का बोझ बहुत बड़ा है। यह पुस्तक दवा उद्योग और नियामकों पर गंभीर सवाल उठाती है। गोट्शे के दस्तावेजी सबूत मजबूत हैं, लेकिन वैज्ञानिक समुदाय में यह अल्पमत है। भारत जैसे देश में जहां एचपीवी वैक्सीन सार्वजनिक स्वास्थ्य का बड़ा हथियार है, ऐसे में पुस्तक याद दिलाती है कि माता-पिता को स्वतंत्र शोध करना चाहिए, स्क्रीनिंग के साथ वैक्सीनेशन बैलेंस करें। अगर आप वैक्सीन के पक्ष में हैं, तो डॉक्टर से चर्चा करें और आधिकारिक डेटा भी देखें।

-विनीत नारायण

सुस्त अर्थव्यवस्था से उभरकर विकास का इंजन बना यूपी!

उत्तर प्रदेश, जिसे कभी बीमारू राज्य की श्रेणी में गिना जाता था, आज निवेश के नक्शे पर एक निर्णायक बदलाव का उदाहरण बन चुका है। बीते 9 वर्षों में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में राज्य ने न केवल अपनी छवि बदली है, बल्कि नीति, नियत और निष्पादन के त्रिकोण पर खरा उतरते हुए खुद को एक 'ड्रीम डेस्टिनेशन' के रूप में स्थापित किया है। 50 लाख करोड़ से अधिक निवेश प्रस्ताव, 1 करोड़ से ज्यादा रोजगार की संभावनाएं, और तेजी से धरातल पर उतरती परियोजनाएं इस परिवर्तन की गवाही देती हैं। जाहिर है, यह बदलाव अचानक नहीं आया, बल्कि सुविचारित नीतियों, मजबूत कानून-व्यवस्था और निवेशक-अनुकूल माहौल के निरंतर निर्माण का परिणाम है।

किसी भी राज्य में निवेश का पहला आधार होता है – सुरक्षा और स्थिरता। उत्तर प्रदेश ने इस मूलभूत सत्य को समझा और उस पर काम किया। बीते वर्षों में कानून-व्यवस्था में सुधार ने निवेशकों के मन से सबसे बड़ा डर खत्म किया। जब उद्योगपति यह महसूस करते हैं कि उनका निवेश सुरक्षित है, तो पूंजी स्वतः आकर्षित होती है। यही कारण है कि आज यूपी उन राज्यों में शामिल है जहां निवेशक केवल अवसर ही नहीं, बल्कि भरोसा भी देखते हैं।

नीतिगत सुधार और 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' योगी सरकार ने निवेश के रास्ते में आने वाली प्रशासनिक जटिलताओं को कम करने पर विशेष जोर दिया। सिंगल विंडो सिस्टम, सेक्टोरल नीतियों का विस्तार और 99% छोटे आपराधिक प्रावधानों को समाप्त करना – ये कदम केवल कागजी सुधार नहीं थे, बल्कि जमीनी स्तर पर बदलाव लाने वाले निर्णय साबित हुए। 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' रैंकिंग में सुधार इस बात का प्रमाण है कि राज्य ने निवेशकों के लिए प्रक्रियाओं को सरल और पारदर्शी बनाया।

अक्सर राज्यों में बड़े-बड़े निवेश समझौते होते हैं, लेकिन वे फाइलों से बाहर नहीं निकलते। उत्तर प्रदेश ने इस मिथक को

तोड़ा है। पिछले 9 वर्षों में प्रदेश में ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी के जरिए 15 लाख करोड़ से अधिक निवेश को धरातल पर उतारना और लाखों रोजगार के अवसर सृजित करना बताता है कि यहां केवल घोषणाएं नहीं, बल्कि क्रियान्वयन होता है। यही वह बिंदु है जहां यूपी अन्य राज्यों से अलग खड़ा नजर आता है।

सेक्टोरल विविधता – हर क्षेत्र में निवेश का विस्तार उत्तर प्रदेश की सबसे बड़ी ताकत उसकी विविधता है, और सरकार ने इसे निवेश में भी बदला है। इलेक्ट्रॉनिक्स, डेटा सेंटर, आईटी, लॉजिस्टिक्स, टेक्सटाइल, खाद्य प्रसंस्करण – लगभग हर क्षेत्र में निवेश आकर्षित हुआ है। इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण नीति के तहत हजारों करोड़ का निवेश और बड़े स्तर का उत्पादन यह दिखाता है कि यूपी केवल पारंपरिक उद्योगों तक सीमित नहीं है, बल्कि नई अर्थव्यवस्था का भी केंद्र बन रहा है।

वैश्विक निवेश और FDI का बढ़ता भरोसा जब विदेशी निवेशक किसी राज्य में पैसा लगाते हैं, तो वह केवल आर्थिक नहीं, बल्कि वैश्विक भरोसे का संकेत होता है। यूपी ने फॉर्च्यून 500 कंपनियों के साथ समझौते कर यह स्पष्ट कर दिया कि वह अब अंतरराष्ट्रीय निवेशकों के लिए भी आकर्षक गंतव्य है। वर्ष 2017 के बाद प्रदेश के FDI में आई तेजी इस बात का प्रमाण है कि राज्य ने खुद को वैश्विक निवेश मानचित्र पर स्थापित कर लिया है।

इंफ्रास्ट्रक्चर और औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र निवेश केवल नीतियों से नहीं आता बल्कि इसके पीछे कई कारण होते हैं। इन्हीं कारणों में से एक कारण है मजबूत इंफ्रास्ट्रक्चर, जो कि परियोजनाओं को स्थायित्व प्रदान करने का आधार बनता है। एक्सप्रेसवे, औद्योगिक कॉरिडोर, आईटी पार्क, फिल्म सिटी, टेक्सटाइल और लेदर पार्क – इन सबने मिलकर एक ऐसा इकोसिस्टम तैयार किया है जहां उद्योगों को बढ़ने का पूरा अवसर मिलता है। नोएडा से लेकर गोरखपुर और प्रयागराज तक औद्योगिक विस्तार इस बात का संकेत है कि विकास अब क्षेत्रीय नहीं, बल्कि राज्यव्यापी हो चुका है।

MSME और रोजगार – विकास का सामाजिक आयाम निवेश का असली मतलब केवल आंकड़े नहीं, बल्कि लोगों के जीवन में बदलाव है। एमएसएमई सेक्टर को बढ़ावा देकर लाखों इकाइयों को वित्तीय सहायता देना और रोजगार के अवसर पैदा करना इस बात का संकेत है कि विकास समावेशी है। जब छोटे उद्योग मजबूत होते हैं, तो अर्थव्यवस्था की जड़ें भी मजबूत होती हैं।

नई आर्थिक महाशक्ति बनकर उभरा उत्तर प्रदेश आज उत्तर प्रदेश केवल एक बड़ा राज्य नहीं, बल्कि एक उभरती आर्थिक शक्ति के रूप में सामने आ रहा है। यह परिवर्तन दिखाता है कि यदि राजनीतिक इच्छाशक्ति, स्पष्ट नीति और मजबूत प्रशासनिक ढांचा हो, तो कोई भी राज्य अपनी पहचान बदल सकता है। योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में यूपी ने यह साबित कर दिया है कि 'ड्रीम डेस्टिनेशन' बनने के लिए केवल संसाधन नहीं, बल्कि दृष्टि और दृढ़ता की जरूरत होती है। आने वाले वर्षों में यह मॉडल न केवल अन्य राज्यों के लिए प्रेरणा बनेगा, बल्कि भारत की आर्थिक वृद्धि में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

ईरानियों का 'रक्षक' बना श्रीलंका, कोलंबो पहुंचे दिल्ली में अमेरिकी राजदूत, भारत की नजर, पाकिस्तान भी जाएंगे

एजेंसी कोलंबो

अमेरिका के दिल्ली में राजदूत सर्गियो गोर दक्षिण एशिया की अपनी पहली यात्रा पर श्रीलंका पहुंचे हैं। अमेरिका के विशेष दूत सर्गियो की यह पहली दक्षिण एशिया यात्रा हैं। सर्गियो गोर भारत के एक और पड़ोसी देश मालदीव की यात्रा पर भी जाएंगे। अमेरिका के दक्षिण एशिया दूत गोर ऐसे समय पर श्रीलंका पहुंचे हैं जब ईरान को लेकर दोनों देशों के बीच तनाव देखने को मिला है। वशिषज्ञों का कहना है कि अमेरिका इस इलाके में अपनी भूमिका बढ़ाना चाहता है और इसी वजह से सर्गियो गोर श्रीलंका और मालदीव की यात्रा पर हैं। उन्होंने कहा कि यह एक 'रणनीतिक संकेत' है जो ऐसे समय पर हो रही है जब ईरान में युद्ध चल रहा है। भारत सरकार ने इस मामले पर कोई टिप्पणी नहीं की है लेकिन यात्रा से पहले गोर ने भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाकार से मुलाकाल की थी। अमेरिका और श्रीलंका के बीच रिश्तों में हाल के दिनों में तनाव देखने को मिला है। अमेरिका की सबमरीन ने भारत से लौट रहे ईरान के युद्धपोत को श्रीलंका के गाले के पास टारपीडो से उड़ा दिया। इसके बाद श्रीलंका की नेवी एक्टिव हुई और उसने करीब 30 ईरानी नौसैनिकों को बचा लिया औ लाशों को निकाला। अमेरिका ने इन्हें ईरान नहीं भेजने के लिए कहा लेकिन श्रीलंका ने उसे खारिज कर दिया। ईरानी नौसैनिकों के शव अब तेहरान पहुंच गए हैं। इसी तरह से अमेरिका ने मिसाइल से लैस अपने फाइटर जेट को श्रीलंका के रनवे पर उतारना चाहा लेकिन कोलंबो की सरकार ने इसकी अनुमति देने से मना कर दिया। श्रीलंका का कहना है कि वह एक तटस्थ नीति का पालन करता है। द हिंदू की रिपोर्ट के मुताबिक सर्गियो गोर की इस यात्रा पर भारत सरकार ने भी अपनी नजर गड़ा रखी है। विकीलीक्स ने साल 2016 में एक अमेरिकी गोपनीय संदेश का खुलासा किया था जिसमें कहा गया था कि साल 2009 में जब इससे पहले अमेरिका ने दक्षिण एशिया के लिए वशिष दूत नियुक्त किया था तब इसका भारत ने कड़ा विरोध किया था। इसे भारत ने बहुत 'खतरनाक' और 'हस्तक्षेप' करने वाला बताया था। हालांकि इस बार भारत की सर्गियो गोर को लेकर प्रतिक्रिया उलट है। द हिंदू की रिपोर्ट के मुताबिक सर्गियो गोर से पहले अमेरिका पूरे दक्षिण एशिया को उन देशों में मौजूद अपने राजदूतों और सहायक अमेरिकी विदेश मंत्री के जरिए संभालता था। सर्गियो गोर पिछले सप्ताह भूटान की भी यात्रा पर गए थे। श्रीलंका और भूटान की यात्रा के बाद अब उम्मीद जताई जा रही है कि सर्गियो गोर अब पाकिस्तान और बांग्लादेश भी जा सकते हैं। इस यात्रा पर सबकी नजरें रहेंगी। इसकी वजह यह है कि क्या पाकिस्तान से लौटने के बाद सर्गियो गोर भारत और पाकिस्तान के बीच दोस्ती कराने के लिए मध्यस्थता करेंगे जिसका दिल्ली हमेशा विरोध करता है। भारत की पूर्व विदेश सचिव और अमेरिका में राजदूत रह चुकीं निरुपमा मेनन राव का कहना है, 'सर्गियो गोर की कोलंबो यात्रा को किसी ठोस सफलता के बजाय एक शांत रणनीतिक संकेत के तौर पर देखना ज्यादा सही होगा। हिंद महासागर में अमेरिका अपनी मौजूदगी को एक सुनियोजित तरीके से फिर से स्थापित कर रहा है, वह भी ऐसे समय पर जब पश्चिम एशिया का तनाव समुद्री इलाके में तेजी से बढ़ रहा है।' गोर की यात्रा के दौरान श्रीलंका और अमेरिका के बीच कोई समझौता नहीं हुआ लेकिन अमेरिकी दूत श्रीलंका के कोलंबो पोर्ट, नेवल बेस और युद्धपोत तक गए।

ईरान और अमेरिका में सुलह कौन करा रहा? भारत के पड़ोसी समेत ये तीन मुस्लिम देश बने मध्यस्थ, नाम जानें

एजेंसी वॉशिंगटन

अमेरिका और ईरान के बीच सुलह की कोशिशें तेज हो गई हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान के पावर प्लांट्स और एनर्जी इंफ्रास्ट्रक्चर पर होने वाले हमलों को 5 दिन के लिए टाल दिया है। ट्रंप ने कहा कि अमेरिका और ईरान के बीच पिछले दो दिनों से चली बातचीत के बाद यह फैसला लिया गया है। ईरान ने ट्रंप के इस बयान पर कुछ नहीं कहा है हालांकि तेहरान पहले कह रहा था कि वो संघर्ष विराम के लिए तैयार नहीं है। इस बीच खुलासा हुआ है कि तीन मुस्लिम देश अमेरिका और ईरान के बीच मध्यस्थता की कोशिश कर रहे हैं, जिनमें भारत का सबसे बड़ा दुश्मन पाकिस्तान भी शामिल है। अमेरिकी समाचार आउटलेट 'एक्सियोस' ने बताया कि तुर्की, मिस्र और पाकिस्तान के प्रतिनिधियों ने व्हाइट हाउस के दूत स्टीव विटकॉफ से मुलाकात की, और अलग से, ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची से भी मिले। रिपोर्टर, बराक रविद ने एक अज्ञात अमेरिकी सूत्र के हवाले से कहा कि चर्चा युद्ध को समाप्त करने और सभी लंबित मुद्दों को हल करने के बारे में थी। अराघची के मंत्रालय ने कहा कि तनाव कम करने के लिए "पहल" की जा रही हैं। ईरान की मेहर समाचार एजेंसी ने बताया कि तेहरान चाहता है कि वॉशिंगटन—जो इस युद्ध को शुरू करने वाला पक्ष है—इसमें सीधे तौर पर शामिल हो। व्हाइट हाउस ने बातचीत के विषय, उसमें शामिल लोगों या बातचीत कहां हुई, इस बारे में पूछे गए सवालों का कोई जवाब नहीं दिया। ट्रंप लगातार ईरान के नेतृत्व, मिसाइल क्षमता और परमाणु ढांचे को खत्म करने की बात कह रहे हैं, लेकिन संघर्ष लंबा खिंचता देख वह भी बैकफुट पर हैं। इस बीच खाड़ी क्षेत्र में अमेरिका के सहयोगियों पर हमले हुए हैं और होर्मुज जलडमरूमध्य के अधिकतर हिस्से में जहाजों की आवाजाही प्रभावित होने से वैश्विक ऊर्जा संकट गहराने लगा है। अमेरिका में होने वाले मध्यावधि चुनावों का दबाव भी है। वर्तमान स्थितियों को ध्यान में रख ट्रंप अब इस टकराव से निकलने का रास्ता तलाशते दिख रहे हैं। उन्होंने हाल ही में कहा कि वह "मध्य पूर्व में हमारे बड़े सैन्य प्रयासों को धीरे-धीरे खत्म करने" की तैयारी कर रहे हैं। खास बात यह है कि इस बार उन्होंने ईरान में सत्ता परिवर्तन (रेजीम चेंज) की शर्त का उल्लेख नहीं किया, जो पहले उनके रुख का अहम हिस्सा था। इजरायल ने अभी तक यह संकेत नहीं दिया है कि वह ट्रंप के किसी भी शांति प्रयास का समर्थन करेगा। इजरायल के सैन्य प्रमुख एयाल जमीर ने कहा कि युद्ध अभी मध्य चरण में है, लेकिन दिशा स्पष्ट है और वे अपने भविष्य और स्वतंत्रता के लिए लड़ाई जारी रखेंगे। इस बीच एक गंभीर घटनाक्रम में ईरान की मिसाइलों ने इजरायल की प्रसिद्ध आयरन डोम सुरक्षा प्रणाली को भेदते हुए डिमोना जैसे संवेदनशील इलाकों को निशाना बनाया, जहां परमाणु संयंत्र मौजूद हैं।

2026 में रूस दौरे पर जाएंगे पीएम मोदी, रूसी विदेश मंत्री ने की पुष्टि, बोले- भारत के साथ दोस्ती अटूट

एजेंसी मॉस्को

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस साल के रूस का दौरा करने वाले हैं। इसकी जानकारी खुद रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने दी है। उन्होंने कहा है कि रूस को उम्मीद है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस साल रूस का दौरा करेंगे। लावरोव ने 'इंडिया एंड रशियाः टुवर्ड्स अ न्यू बाइलेट्रल एजेंडा ' (भारत और रूसः एक नए द्विपक्षीय एजेंडे की ओर) शीर्षक वाले सम्मेलन को वर्चुअली संबोधित करते हुए कहा, "हम 2026 में प्रधानमंत्री मोदी के रूस दौरे का इंतजार कर रहे हैं।" इस सम्मेलन को विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भी संबोधित किया है।
लावरोव ने कहा, हमें उम्मीद है कि प्रधानमंत्री मोदी 2026 में रूस का दौरा करेंगे। उन् 'रूस और भारत की दशकों पुरानी दोस्ती इस बात का एक आदर्श उदाहरण है कि दो देशों के बीच आपसी संबंध कैसे होने चाहिए और कैसे बनाए जा सकते हैं।' उन्होंने यह भी कहा, 'उच्चतम स्तर पर होने वाली भरोसेमंद बातचीत की भूमिका को कम करके आंकना मुश्किल है।' रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने दिसंबर 2025 में अपनी भारत यात्रा के दौरान पीएम मोदी को 24वें भारत-रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन के लिए रूस आने का न्योता दिया था। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच $100 बिलियन के द्विपक्षीय व्यापार लक्ष्य (2030 तक) और लॉजिस्टिक्स, तकनीक व निवेश जैसे क्षेत्रों में सहयोग पर चर्चा होने की उम्मीद है। 2026 में भारत की ब्रिक्स अध्यक्षता के दौरान भी दोनों देशों के बीच उच्च स्तरीय समन्वय बना रहेगा।
पीएम मोदी ने अक्तूबर 2024 में रूस के कजान में आयोजित 16वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लिया था। जुलाई 2024 में भी पीएम मोदी ने रूस की दो दिवसीय यात्रा की थी। यह यूक्रेन संघर्ष के बाद उनकी पहली रूस यात्रा थी। इस दौरान उन्हें रूस के सर्वोच्च नागरिक सम्मान, 'ऑर्डर ऑफ सेंट एंड्रयू द अपोस्टल' से सम्मानित किया गया था। इसके बाद रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने दिसंबर 2025 में भारत का दौरा किया था, जहां दोनों देशों के नेताओं ने 'विज़न 2030' दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए थे।

भारत के पड़ोसी देश के पास अरबों डॉलर का खजाना, तेल-गैस का बड़ा भंडार, कतर की नहीं होगी जरूरत

एजेंसी कोलंबो

श्रीलंका के ऑफशोर भंडारों में कथित तौर पर तीन ट्रिलियन क्यूबिक फीट तक प्राकृतिक गैस मौजूद है। साथ ही देश के क्षेत्रीय जल और विशेष आर्थिक क्षेत्र के भीतर समुद्र तल के नीचे कई अरब बैरल कच्चा तेल होने की संभावना है। श्रीलंका के पेट्रोलियम विकास प्राधिकरण के चेयरमैन सलिया विक्रमसूर्या के हवाले से अरबों डॉलर के इस खजाने के बारे में दावा किया गया है। श्रीलंका में कच्चे तेल और गैस का भंडार मिलता है तो यह देश की आर्थिक सूरत को बदल सकता है। साथ ही भारत और दूसरे पड़ोसी देशों को भी सस्ता गैस और तेल मिल सकेगा। न्यूज वायर ने अपनी एक रिपोर्ट में बताया है कि हालिया वर्षों में जमा किए गए बेसिन मॉडलिंग और भूकंपीय डाटा के आधार पर प्राकृतिक गैस और कई अरब बैरल कच्चा तेल होने की संभावना जताई गई है। इन तमाम डाटा के आधार पर श्रीलंका की ऑफशोर संसाधन क्षमता के बारे में एक्सपर्ट को नई समझ मिली है।
श्रीलंका में गैस और तेल का बड़ा भंडार होने की संभावना जताई गई है लेकिन हाल-फिलहाल में इसके इस्तेमाल में आने की उम्मीद नहीं है। रिपोर्ट में कहा गया है कि निकट भविष्य में व्यावसायिक रूप से गैस निकालना शुरू होने की संभावना कम है। फिलहाल निवेशकों को आकर्षित करने और खोज के लाइसेंस जारी करने की प्रक्रिया शुरुआती चरण में है।
श्रीलंका ने हाल ही में नया रेगुलेटरी ढांचा पेश किया है, जिसमें 2021 का पेट्रोलियम संसाधन अधिनियम शामिल है। इसका मकसद ऑफशोर खोज में पारदर्शिता बढ़ाकर निवेशकों का भरोसा जीतना है। इसके तहत खुली लाइसेंसिंग प्रणाली लाई गई है। इसके तहत ऑफशोर क्षेत्रों को छोटे-छोटे ब्लॉकों में बांटा गया है, ताकि अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा कंपनियों की भागीदारी बढ़ाई जा सके। श्रीलंका में गैस और तेल मिलने की संभावना ऐसे समय जताई गई है, जब दुनिया का बड़ा हिस्सा उर्जा संकट का सामना कर रहा है। ईरान में युद्ध शुरू होने के बाद से समुद्री व्यापार प्रभावित हो रहा है। साथ ही अरब देशों को एनर्जी ढांचे भी निशाना बने हैं। ऐसे में भारत कई देशों में गैस और तेल का संकट हालिया हफ्तों में देखा गया है। ऐसे में श्रीलंका की तरफ एशियाई देश निश्चित की उम्मीद की नजर से देखेंगे।

डिएगो गार्सिया निशाना, 4000 KM रेंज, भारत के पड़ोस से गुजरी ईरानी मिसाइल, एक्सपर्ट से 5 पॉइंट में समझें खतरा

एजेंसी तेहरान

ईरान के खिलाफ अमेरिका और इजरायल का युद्ध पहली बार मिडिल ईस्ट के बाहर हिंद महासागर क्षेत्र में पहुंच गया है। बीते शनिवार को IRGC की एयरोस्पेस फोर्स ने डिएगो गार्सिया में स्थित अमेरिका और ब्रिटेन के संयुक्त बेस पर मिसाइल दागकर दुनिया को चौंका दिया। यह बेस हिंद महासागर में भारत से सुदूर दक्षिण में स्थित है, जो ईरान के नजदीकी तट से लगभग 3800 किमी दूर है। हालांकि, दोनों में से कोई मिसाइल अपने लक्ष्य तक सफलतापूर्वक नहीं पहुंच पाई, लेकिन इस घटना ने ईरान के मध्यम-दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल क्षमता को लेकर हलचल मचा दी है। डिएगो गार्सिया पर हमले के लिए मिसाइल को भारत के पड़ोस से गुजरना पड़ा होगा। ईरान के सार्वजनिक दावे के अनुसार, उसके जखीरे में मौजूद मिसाइलों की अधिकतम क्षमता 2000 किमी तक है। ऐसे में लगभग दोगुनी दूरी पर मिसाइल लॉन्च करना साफ दिखाता है कि उसके पास ऐसे हथियार हैं, जिनके बारे में दुनिया को पता नहीं है। हालांकि, एक्सपर्ट का कहना है कि ईरान का लगभग 4000 किमी की दूरी के लिए मिसाइल लॉन्च करना चौंकाने वाला नहीं है। अमेरिका में रहने वाले अंकित पांडा ईरान के मिसाइल कार्यक्रम पर सालों से नजर रख रहे हैं। उन्होंने ईरानी मिसाइल लॉन्च का विश्लेषण किया है। 1- ईरान के पास मौजूद है क्षमता पांडा का कहना है कि जो लोग ईरान के अंतरिक्ष और बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रमों में हो रहे घटनाक्रमों पर नजर रख रहे हैं, वे मानते हैं कि लंबी दूरी की मिसाइल बनाने की क्षमता ईरान की तकनीकी क्षमता के दायरे में ही है। ईरान के पास अलग-अलग आकार और प्रोपेलेंड प्रकार के बूस्टर बनाने की विशेषज्ञता की कोई कमी नहीं है। उन्होंने कहा कि मिसाइलों की रेंज तय करना पेचीदा काम है। पेलोड के वजन में आसानी से बदलाव किया जा सकता है। 2- स्पेस लॉन्च व्हीकल को बनाया मिसाइल पांडा ने मिसाइल को बदला हुआ स्पेस लॉन्च व्हीकल (SLV) होने की संभावना जताई है। इजरायल डिफेंस फोर्सेज के चीफ लेफ्टिनेंट जनरल एयाल जमीर ने कहा कि डिएगो गार्सिया पर हमले के लिए किए गए लॉन्च में दो-चरणों वाली बैलिस्टिक मिसाइल शामिल थी। पांडा ने बताया कि हालांकि, लॉन्चर के बारे में और जानकारी नहीं है, लेकिन सबसे संभावित विकल्प तीन चरणों वाले छोटे SLV Ghaem 100 या 105 से बना कोई सिस्टम लगता है। 3- ईरानी मिसाइल कितना खतरा? ईरानी मिसाइल की लंबी रेंज के बावजूद पांडा इसे यूरोप और दूसरी जगहों के लिए सीमित खतरा मानते हैं। उन्होंने अपने विश्लेषण में कहा कि पहले कभी न जांची गई SLV पर आधारित पारंपरिक बैलिस्टिक मिसाइल से सैन्य रूप से कोई बड़ा असर डालना बेहद मुश्किल काम है। डिएगो गार्सिया पर किए हमलों का मकसद यह संदेश देना है कि फारस की खाड़ी और मध्य पूर्व के भौगोलिक दायरे से भी युद्ध का विस्तार किया जा सकता है। डिएगो गार्सिया भारत के दक्षिण में स्थित है 4- ईरान ने मिसाइल रेंज से पाबंदी हटाई इस मिसाइल लॉन्च से यह पता चलता है कि ईरान ने मिसाइलों पर 2000 किमी की पाबंदी हटा ली है। बीते जून में 12 दिवसीय युद्ध के बाद ईरानी सूत्रों ने मिसाइल रेंज पर खुद से लगाई गई पाबंदी हटाने का संकेत दिया था। इस युद्ध से यह साफ हो गया है। ध्यान देने की बात है कि यह पाबंदी खुद लगाई गई थी और इसकी पुष्टि नहीं हुई थी। हालांकि, इजरायल ने पहले कहा था कि ईरान अपनी मिसाइल क्षमता के बारे में गुमराह कर रहा है।
5- क्या उत्तर कोरिया ने मदद की? पांडा ने हालांकि इसे केवल एक अनुमान लगाया है। उन्होंने जुलाई 2017 में उत्तर कोरिया के अंतरद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल के दूसरे परीक्षण का जिक्र किया और कहा कि इस दौरान ऐसा लगा कि उन्होंने ऊपरी चरण में कुछ बदलाव किए हैं। पांडा के अनुसार, संभवतः ईरान के Safir SLV से प्रेरित डिजाइन इस्तेमाल किया गया था, जिसमें ईरान ने सीधी तकनीकी मदद दी। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या उत्तर कोरिया की लंबी दूरी की मिसाइल विशेषज्ञता ईरान तक पहुंची है।

ईरान के खर्ग द्वीप पर कब्जा करेगा अमेरिका? 5000 सैनिक और मरीन तैनात, तेहरान ने भी बिछाया मौत का जाल

एजेंसी वॉशिंगटन

अमेरिका होर्मुज जलडमरूमध्य को सुरक्षित करने और ईरान के तेल निर्यात बुनियादी ढांचे को निशाना बनाने के लिए अब सीधी कार्रवाई की तैयारी में है। इसके लिए अमेरिका ने मध्य पूर्व में भारी संख्या में सैनिकों, युद्धपोतों और पनडुब्बियों को तैनात किया है। ऐसे में आशंका जताया जा रहा है कि अमेरिका फारस की खाड़ी में स्थित ईरान के खर्ग द्वीप पर कब्जे के लिए जमीनी हमला कर सकता है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पहले ही ईरान को 48 घंटे की चेतावनी दे दी है। उन्होंने कहा है कि अगर ईरान होर्मुज जलडमरूमध्य को जहाजों के आवागमन के लिए पूरी तरह नहीं खोलता, तो अमेरिका ईरान के ऊर्जा ढांचे, विशेष रूप से उसके पावर प्लांट्स पर हमला करेगा। वॉशिंगटन पोस्ट की रिपोर्ट के अनुसार, 4,500 अमेरिकी नौसैनिकों और मरीन की एक टुकड़ी को इस क्षेत्र में भेजा जा रहा है, जिसमें हेलीकॉप्टर, F-35 लड़ाकू विमान और बख्तरबंद लैंडिंग वाहनों द्वारा समर्थित एक इन्फैंट्री बटालियन लैंडिंग टीम शामिल है। अमेरिका ने सैन डिएगो से 11वीं मरीन एक्सपीडिशनरी यूनिट जैसी ही एक और टुकड़ी को मध्य पूर्व में तैनात किया है। इस कदम को ईरान के खिलाफ जमीनी हमले की क्षमता को मजबूत करने की कोशिश के तौर पर देखा जा रहा है। रिपोर्ट में एक इजरायली अधिकारी के हवाले से बताया गया है कि मध्य पूर्व में अमेरिका की यह तैनाती एक स्पष्ट ऑपरेशनल उद्देश्यों को पूरा करने के लिए की गई है। इजरायली अधिकारी ने कहा, "ये मरीन सिर्फ सजावट के लिए नहीं आ रहे हैं।" अधिकारी ने कहा कि योजना "द्वीप और जलडमरूमध्य पर कब्जा करने की है।" माना जा रहा है कि इजरायली अधिकारी का इशारा फारस की खाड़ी में स्थित खर्ग द्वीप की ओर था, जो ईरान का पेट्रोलियम निर्यात करने का मुख्य केंद्र है। ईरान के लिए कितना महत्वपूर्ण है खर्ग द्वीप? रिपोर्ट में बताया गया है कि खर्ग द्वीप पर नियंत्रण से तेहरान के तेल राजस्व में काफी कमी आ सकती है और ईरान पर दबाव बन सकता है। इसके साथ ही अमेरिका यह भी दिखा सकता है कि वह होर्मुज जलडमरूमध्य को खोलने के लिए पूरी तरह सक्षम है। होर्मुज जलडमरूमध्य से आमतौर पर दुनिया की कुल तेल आपूर्ति का लगभग पांचवां हिस्सा गुजरता है। ईरान ने इस रास्ते को अमेरिका और उसके मित्र देशों के लिए बंद कर दिया है। ऐसे में यह जलडमरूमध्य इस संघर्ष का मुख्य केंद्र बनता जा रहा है। ईरान ने अमेरिका को चेतावनी देते हुए कहा है कि अगर उसके क्षेत्र पर सीधा हमला हुआ तो वह बड़े पैमाने पर कार्रवाई करेगा। सोमवार को जारी एक कड़ी चेतावनी में ईरान की रक्षा परिषद ने कहा कि उसके तट या द्वीपों पर किसी भी तरह के हमले से फारस की खाड़ी में नेवल माइंस बिछाई जा सकती हैं। बयान में कहा गया है, "ईरान के तटों या द्वीपों पर हमला करने के किसी भी प्रयास के परिणामस्वरूप खाड़ी में सभी पहुंच मार्गों को अलग-अलग तरह की बारूदी सुरंगों से भर दिया जाएगा, जिनमें तैरती हुई बारूदी सुरंगें भी शामिल हैं जिन्हें तट से छोड़ा जा सकता है।" ईरान ने यह भी कहा है कि "इस स्थिति में, पूरी खाड़ी व्यावहारिक रूप से लंबे समय तक होर्मुज जलडमरूमध्य जैसी स्थिति में रहेगी (...) 1980 के दशक में कुछ समुद्री खानों को हटाने में 100 से अधिक माइनस्वीपरों की विफलता को नहीं भूलना चाहिए।"

नए चेहरों के साथ बैंकॉक में उतरी भारतीय टीम, क्या फिर होगी Gold की बौछार ?

एजेंसी नई दिल्ली

भारत तीरंदाजी के नये अंतरराष्ट्रीय सत्र का आगाज यहां मंगलवार से शुरू हो रहे एशिया कप के पहले चरण से करेगा जिसके लिये टीम में नामी गिरामी सितारों की बजाय प्रतिभावान युवाओं को जगह दी गई है। भारतीय टीम में दीपिका कुमारी, अंकिता भकत, धीरज बोम्मादेवरा, तरूणदीप राय , ज्योति सुरेखा वेन्नम और अभिषेक वर्मा नहीं हैं। भारतीय टीम प्रबंधन जापान में सितंबर अक्टूबर में होने वाले एशियाई खेलों तक चलने वाले इस व्यस्त सत्र के पहले टूर्नामेंट में अपने युवा खिलाड़ियों को आजमाना चाहता है। शीर्ष तीरंदाज मैक्सिको और शंघाई में अप्रैल से होने वाले विश्व कप के पहले दो चरण के लिये वापसी करेंगे। पिछले साल भारत ने इस टूर्नामेंट में पांच स्वर्ण समेत आठ पदक जीते थे। दक्षिण कोरिया जैसे दिग्गज की गैर मौजूदगी में भारत का पलड़ा फिर भारी लग रहा है। उसे चीन और बांग्लादेश से चुनौती मिल सकती है। रिकर्व पुरूष वर्ग में आस्ट्रेलिया के रियान टियाक प्रबल दावेदार हैं जो विश्व रैंकिंग में 27वें स्थान पर हैं। महिला वर्ग में रूस में जन्मी तटस्थ खिलाड़ी नूरिनिस्सो माखमुदोवा (45वीं रैंकिंग) सर्वोच्च रैंकिंग वाली तीरंदाज हैं। भारतीय पुरूष कंपाउंड टीम में दुनिया के चौथे नंबर के तीरंदाज ऋषभ यादव, एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता प्रथमेश जावकर और रजत चौहान हैं।

पिछले साल कुशल दलाल ने व्यक्तिगत स्वर्ण जीता था जबकि मानव जाधव और गणेश तिरिमुरू के साथ टीम स्वर्ण अपने नाम किया था। महिला वर्ग में ज्योति की गैर मौजूदगी में नजरें 20 वर्ष की चिकिथा तानीपर्थी पर होंगी जो विश्व रैंकिंग में 37वें स्थान पर हैं। भारतीय टीम : रिकर्व पुरूष : देवांग गुप्ता, आरव पूनिया, जुयेल सरकार और सुखचैन सिंह रिकर्व महिला : कीर्तिक, अंशिका कुमारी, रूमा बिस्वास और रिद्धि कंपाउंड पुरूष : रजत चौहान, प्रथमेश जावकर, उदय कम्बोज और ऋषभ यादव कंपाउंड महिला : स्वाति दुधवाल, राज कौर, तेजल साल्वे और चिकिथा तानीपर्थी।

PSL 2024 के बीच खिलाड़ियों की 'भगदड़', PCB चीफ Mohsin Naqvi ने दी सख्त एक्शन की चेतावनी

एजेंसी नई दिल्ली

क्रिकेट की दुनिया में इस समय दो बड़ी लीग के टकराव को लेकर हलचल तेज हो गई है, जहां खिलाड़ियों के अचानक टीम बदलने से विवाद गहराता नजर आ रहा है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने अब इस मुद्दे पर सख्त रुख अपनाने के संकेत दिए हैं।

बता दें कि पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने साफ कहा है कि जो खिलाड़ी आखिरी समय पर पाकिस्तान सुपर लीग छोड़कर दूसरी लीग में शामिल होंगे, उनके खिलाफ नियमों के तहत कार्रवाई की जाएगी। मौजूद जानकारी के अनुसार यह विवाद तब और बढ़ गया जब श्रीलंका के खिलाड़ी दासुन शनाका ने लाहौर कलंदर्स की टीम से हटकर राजस्थान की टीम का रुख कर लिया।

गौरतलब है कि शनाका को एक घायल खिलाड़ी के स्थान पर शामिल किया गया है। इससे पहले भी जिम्बाब्वे के तेज गेंदबाज ब्लेसिंग मुजरबानी ने इस्लामाबाद यूनाइटेड से अलग होकर कोलकाता की टीम से जुड़ने का फैसला लिया था। ऐसे लगातार मामलों ने पाकिस्तान लीग प्रबंधन की चिंता बढ़ा दी है। मोहसिन नकवी ने कहा कि पिछले साल भी ऐसा मामला सामने आया था, जिसमें एक खिलाड़ी पर

प्रतिबंध लगाया गया था। उनका कहना है कि इस बार भी उसी तरह की कार्रवाई दोहराई जा सकती है। उन्होंने यह भी साफ किया कि दोनों लीग का एक साथ होना बड़ी समस्या नहीं है, क्योंकि जहां कुछ खिलाड़ी जा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर कई अच्छे खिलाड़ी पाकिस्तान लीग में भी आ रहे हैं।

मौजूद जानकारी के अनुसार पाकिस्तान सुपर लीग का कार्यक्रम पहले से तय था और पूरे साल में इसके लिए कोई दूसरा समय उपलब्ध नहीं था, इसलिए इसे टालना संभव नहीं था। यही वजह है कि इस बार भी यह लीग दूसरी बड़ी लीग के साथ ही आयोजित हो रही है।

इसके अलावा कुछ अन्य खिलाड़ियों ने भी लीग से नाम वापस लिया है, हालांकि उन्होंने व्यक्तिगत कारणों का हवाला दिया है।

Player ऑफ द ईयर की रेस में हार्दिक और सविता, देखें नॉमिनेशन की पूरी लिस्ट

एजेंसी नई दिल्ली

भारत के स्टार मिडफील्डर हार्दिक सिंह, फॉरवर्ड सुखजीत सिंह और अभिषेक और डिफेंडर संजय इस साल हॉकी इंडिया बलबीर सिंह सीनियर वर्ष के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी के पुरस्कार की दौड़ में हैं। महिला वर्ग में सलीमा टेटे, नवनीत कौर, लालरेम्सियामी और सविता पूनिया को नामांकन मिला है। यहां शुक्रवार को होने वाले हॉकी इंडिया पुरस्कार समारोह में उदीयमान खिलाड़ी (अंडर 21) का जुगराज सिंह और असुंथा लाकड़ा पुरस्कार भी दिया जायेगा। अंतिम नामांकन में आठ श्रेणियों में 32 खिलाड़ियों को चुना गया है। इसके साथ ही हॉकी में अमूल्य योगदान के लिये जमन लाल शर्मा पुरस्कार और असाधारण उपलब्धि के लिये अध्यक्ष का पुरस्कार भी दिया जायेगा।अधिकारियों की श्रेणी में वर्ष के सर्वश्रेष्ठ अंपायर /अंपायर मैनेजर का पुरस्कार, वर्ष के सर्वश्रेष्ठ तकनीकी अधिकारी और सर्वश्रेष्ठ सदस्य ईकाई का पुरस्कार भी दिया जायेगा। इसके साथ ही एशिया कप में स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय पुरूष टीम और जूनियर विश्व कप में कांस्य पदक जीतने वाली जूनियर पुरूष टीम को भी सम्मानित किया जायेगा। हॉकी इंडिया अध्यक्ष दिलीप टिर्की ने कहा ,'' भारतीय हॉकी के लिये यह अहम साल है और ऐसे में असाधारण प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों और पिछले एक साल में अपना योगदान देने वालों को सम्मानित करना महत्वपूर्ण है।''

नामांकन : बलजीत सिंह वर्ष 2025 का सर्वश्रेष्ठ गोलकीपर : प्रिंसदीप सिंह, कृशन बहादुर पाठक, बिछू देवी खारीबम, सूरज करकेरा परगट सिंह वर्ष का सर्वश्रेष्ठ डिफेंडर : संजय, अमित रोहिदास, जुगराज सिंह और हरमनप्रीत सिंह अजित पाल सिंह वर्ष का सर्वश्रेष्ठ मिडफील्डर : हार्दिक सिंह, सुमित, राजकुमार पाल, नीलाकांता शर्मा धनराज पिल्लै वर्ष का सर्वश्रेष्ठ फॉरवर्ड : सुखजीत सिंह, अभिषेक, नवनीत कौर, शिलानंद लाकड़ा असुंथा लाकड़ा उदीयमान महिला अंडर 21 खिलाड़ी : साक्षी राणा, ज्योति सिंह, सुनेलिटा टोप्पो, कनिका सिवाच जुगराज सिंह उदीयमान पुरूष अंडर 21 खिलाड़ी : प्रिंसदीप सिंह, मनमीत सिंह, अनमोल इक्का, अर्शदीप सिंह बलबीर सिंह सीनियर वर्ष की सर्वश्रेष्ठ महिला खिलाड़ी : नवनीत कौर, सलीमा टेटे, लालरेम्सियामी, सविता बलबीर सिंह सीनियर वर्ष का सर्वश्रेष्ठ पुरूष खिलाड़ी : हार्दिक सिंह, सुखजीत सिंह, संजय और अभिषेक।

स्पेन में प्रमोद भगत का जलवा, स्पेनिश पैरा बैडमिंटन में 2 गोल्ड समेत जीते 3 मेडल

एजेंसी नई दिल्ली

पैरालम्पिक चैम्पियन प्रमोद भगत ने स्पेनिश पैरा बैडमिंटन इंटरनेशनल 2026 में दो स्वर्ण और एक रजत पदक जीता। भगत ने पुरूष एकल एसएल3 में भारत के ही नितेश कुमार को 21 . 17, 10 . 21, 21 . 18 से हराया। मिश्रित युगल में उन्होंने मनीषा रामदास के साथ स्वर्ण पदक जीता। भारतीय जोड़ी ने ब्राजील के रोजेरियो जूनियर जेवियर डि ओलिवियरा और एडवर्डो डि ओलिवियरा डायस को 13 . 21, 21 . 12, 21 . 19 से मात दी। भगत ने पुरूष युगल एसएल3 और एसयू5 श्रेणी में सुकांत कदम के साथ रजत पदक जीता। सुकांत ने पुरूष एकल एसएल4 फाइनल में कोरिया के चो नदान को 21 . 16, 21 . 17 से हराया। नितेश ने पुरूष एकल एसएल3 में रजत और जगदीश ने कांस्य पदक जीता। नीरज ने महिला एकल एसएल3 में कांस्य पदक हासिल किया।

पुरूष युगल एसएल3 और एसयू 5 में दीप रंजन बिसोइ और कुलदीप एम ने कांस्य पदक जीता। मिश्रित युगल एसएल3 और एसयू 5 में शिवम यादव और नीरज, नितेश कुमार और टी मुरूगेसन ने कांस्य पदक जीता। महिला एकल एसयू 5 में मनीषा रामदास ने स्वर्ण और तुलसीमति मुरूगेसन ने रजत पदक हासिल किया। पुरूष युगल एसयू 5 में जतिन आजाद और शिवम यादव को कांस्य पदक मिला जबकि महिला एकल एसएच 6 में मनीषा पटेल को कांस्य पदक मिला।

व्यापार

चीन के प्रपोजल के खिलाफ भारत-तुर्की आए साथ, 38 और देश हमारे पीछे, बीजिंग को अमेरिका का सपोर्ट

एजेंसी नई दिल्ली

भारत और तुर्की के रिश्ते हाल के समय में अच्छे नहीं रहे हैं। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान के साथ खड़े होने के कारण ऐसा हुआ। हालांकि, चीन के एक प्रस्ताव के खिलाफ दोनों एक साथ खड़े हुए हैं। यही नहीं, भारत और तुर्की समेत 40 देशों को इसकी चुभन महसूस हुई है। इन देशों ने इस हफ्ते हुई मंत्री-स्तरीय बैठक में चीन के समर्थन वाले एक नए फ्रेमवर्क के प्रस्ताव पर विश्व व्यापार संगठन (WTO) में चिंता जताई है। इकोनॉमिक टाइम्स (ईटी) ने इस मामले से जुड़े अधिकारियों के हवाले से यह जानकारी दी। इस नए फ्रेमवर्क का नाम ' इन्वेस्टमेंट फेसिलिटेशन फॉर डेवलपमेंट ' (IFD) है। यह घटनाक्रम कई मायने में महत्वपूर्ण है। कारण है कि इस प्रस्ताव के समर्थक 26 से 29 मार्च तक कैमरून में होने वाले डब्ल्यूटीओ के 14वें मंत्री-स्तरीय सम्मेलन (MC14) में इस पर कोई समझौता करने के लिए उत्सुक हैं। हालांकि, इस समझौते का समर्थन करने वाले करीब 120 सदस्य देशों का दावा है कि इससे प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने और पारदर्शिता बढ़ाने में मदद मिलेगी। इससे अंतरराष्ट्रीय निवेश को बढ़ावा मिलेगा। लेकिन, चिंता की बात यह है कि इसके तहत एक स्वतंत्र संस्था के जरिये निवेश की जांच के लिए 'प्री-इन्वेस्टमेंट

अपील सिस्टम' बनाया जाएगा। इससे पॉलिसी फ्लेक्सिबिलिटी सीमित हो जाएगी। भारत समेत विरोध करने वाले देशों की चंता एक अधिकारी ने बताया कि नई दिल्ली और अन्य सदस्य देशों ने सीमित नीतिगत दायरे और गरीब देशों के लिए 'विशेष और अलग व्यवहार' (S&DT) के प्रावधानों की कमी को लेकर चिंता जताई है। तुर्की ने अलग से चिंता जताते हुए कहा है कि इस प्रस्ताव में 'प्री-इन्वेस्टमेंट' और 'पोस्ट इन्वेस्टमेंट' प्रावधानों को लेकर स्पष्टता का अभाव है। साथ ही रक्षा और परमाणु ऊर्जा जैसे संवेदनशील क्षेत्रों के लिए कोई छूट नहीं दी गई है। प्रस्तावित फ्रेमवर्क में ई-कॉमर्स को भी शामिल कर लिया गया है। नेपाल और श्रीलंका जैसे देशों ने भी अपनी आशंकाएं जाहिर की हैं। वे इस पहल में शामिल नहीं हैं। वहीं, अमेरिका, जो आईएफडी का सदस्य नहीं है, फिर भी इस समझौते को डब्ल्यूटीओ के ढांचे में शामिल किए जाने का समर्थन कर रहा है। भारत और दक्षिण अफ्रीका ने 2024 के मंत्री-स्तरीय सम्मेलन के दौरान आईएफडी को डब्ल्यूटीओ के ढांचे में शामिल करने के प्रयासों को रोक दिया था।

फिलहाल, इस बात के प्रयास किए जा रहे हैं कि आईएफडी समझौते को डब्ल्यूटीओ के कानूनी ढांचे के तहत संगठन के 'परिशिष्ट 4' में एक 'बहुपक्षीय समझौते' के रूप में शामिल किया जाए। परिशिष्ट 4 में सूचीबद्ध बहुपक्षीय समझौते केवल उन सदस्य देशों पर लागू होते हैं, जो उनमें शामिल होते हैं। जो सदस्य शामिल नहीं होते, उन पर ये समझौते बाध्यकारी नहीं होते। किसी भी समझौते को इस परिशिष्ट में जोड़ने के लिए संगठन के सभी सदस्य देशों की सर्वसम्मति होना जरूरी है। एक अधिकारी ने बताया, 'जिन सदस्य देशों ने इस पहल में हिस्सा लिया है, उन्हें भी इस समझौते की परिभाषा, इसके दायरे और इसकी गतिविधियों को लेकर स्पष्टता के अभाव से जुड़ी चिंताएं हैं।' नई दिल्ली ने यह रुख बनाए रखा है कि व्यापार और निवेश से जुड़े किसी भी पहलू पर चर्चा डब्ल्यूटीओ के दायरे से बाहर है। कारण है कि यह कोई व्यापार समझौता नहीं है। साथ ही, संगठन को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बहुपक्षीय समझौते अपवाद ही बने रहें, न कि एक सामान्य नियम बन जाएं।

ट्रंप का एक मैसेज और भरभरा गए तेल, सोने-चांदी के दाम, भारत की कहानी सेट कर दी

एजेंसी नई दिल्ली

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का एक मैसेज आया और दुनिया की अर्थव्यवस्था पलट गई। इस मैसेज के आते ही सोमवार को दुनिया भर में कच्चे तेल (क्रूड) की कीमतें भरभरा गईं। सोना-चांदी धड़ाम हो गए। ब्रेंट क्रूड 13 फीसदी से ज्यादा नीचे आ गया। सोने में 40 साल की सबसे बड़ी गरिावट दर्ज की गई। ऐसा तब हुआ जब डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान के खिलाफ सैन्य हमलों पर टेम्परेरी रोक लगाने की घोषणा की। उन्होंने बताया कि दोनों देशों के बीच बातचीत 'सार्थक' रही। पांच दिनों के लिए ईरान के एनर्जी इन्फ्रास्ट्रक्चर पर अमेरिका ने हमले रोकने की बात कही है। भारत के लिए यह बहुत अच्छी खबर है। युद्ध के बाद से उसे तरह-तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था। होर्मुज स्ट्रेट बंद होने से सप्लाई में रुकावट आई थी। इसने भारत में एलपीजी की किल्लत पैदा कर दी है। ट्रंप के ऐलान के बाद अंतरराष्ट्रीय बाजार में ब्रेंट क्रूड फ्यूचर करीब 17 डॉलर यानी

लगभग 15 फीसदी लुढ़ककर 96 डॉलर प्रति बैरल के सत्र के निचले स्तर पर पहुंच गया। वहीं, अमेरिकी वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट क्रूड करीब 13 डॉलर यानी 13.5 फीसदी भरभराकर 85.28 डॉलर पर आ गया। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) में क्रूड की कीमतें शुरुआती बढ़त गंवाते हुए लोअर सर्किट पर पहुंच गईं। वायदा कारोबार में कीमतें 9 फीसदी गिरकर 8,431 रुपये प्रति बैरल हो गईं। एमसीएक्स पर अप्रैल डिलीवरी के लिए कच्चे तेल के भाव शुरुआत में बढ़कर खुले और 362 रुपये यानी 4 फीसदी की बढ़त के साथ 9,620 रुपये प्रति बैरल के इंट्राडे हाई पर पहुंच गए। हालांकि, बाद में कीमतों में तेजी से उलटफेर हुआ। ये 827 रुपये या 9 फीसदी घटकर 8,431 रुपये प्रति बैरल पर आ गईं। यह इसकी लोअर सर्किट सीमा है। यह तेज गिरावट इसलिए आई क्योंकि चल रहे संघर्ष में तनाव कम होने के संकेतों के बाद सप्लाई में रुकावट की आशंकाएं घट गईं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि उन्होंने रक्षा विभाग को निर्देश दिया है कि ईरान के बिजली संयंत्रों और ऊर्जा बुनियादी ढांचे पर नियोजित हवाई हमलों को पांच दिनों के लिए टाल दिया जाए। उन्होंने कहा कि यह फैसला पिछले दो दिनों में अमेरिका और ईरान के बीच हुई बहुत अच्छी और सार्थक बातचीत के बाद लिया गया। गिफ्ट निफ्टी फ्यूचर ने भी इसी से संकेत लेते हुए अपनी प्रतिक्रिया दी। पिछले बंद भाव 22,465 के मुकाबले बढ़कर 23,533.50 पर पहुंच गया। इसमें 1,068.5 अंकों यानी 4.75 फीसदी की बढ़त दर्ज की गई। शाम करीब 5.20 बजे गिफ्ट निफ्टी फ्यूचर 853.50 अंक या 3.80 फीसदी की बढ़त के साथ 23,318.50 पर कारोबार कर रहा था।

एक महीने में 200% रिटर्न, गिरते बाजार में इस क्रिप्टो ने बरसाया पैसा, कीमत बिटकॉइन से बहुत कम

एजेंसी नई दिल्ली

सोमवार का दिन शेयर मार्केट से लेकर सोना-चांदी और क्रिप्टो मार्केट तक के लिए गिरावट वाला रहा। दोपहर 1:30 बजे ग्लोबल मार्केट कैप 2.35 ट्रिलियन डॉलर पर था। पिछले 24 घंटे में इसमें 1 फीसदी की गिरावट आई है। वहीं पिछले 24 घंटे में बिटकॉइन समेत कई बड़ी क्रिप्टोकरेंसी लाल निशान पर कारोबार कर रही थीं। पिछले 7 दिनों में काफी क्रिप्टो निवेशकों का बड़ नुकसान कर चुकी हैं। वहीं एक क्रिप्टो ऐसी है जो इस गिरते बाजार में भी निवेशकों की झोली भर रही है। इसका नाम रिवर (River) है। रिवर क्रिप्टोकरेंसी ने भी पिछले 24 घंटों में निवेशकों को नुकसान दिया है। यह 2.50% से कुछ ज्यादा की गिरावट के साथ करीब 26 डॉलर पर कारोबार कर रही है। वहीं 7 दिनों में इसमें 8 फीसदी की तेजी आई है। इतनी तेजी बिटकॉइन से लेकर इथेरियम, बाइनेंस, रिपल तक में नहीं आई है। एक महीने में रिवर क्रिप्टो ने निवेशकों को छप्परफाड़ रिटर्न दिया है। पिछले एक महीने में जहां ज्यादातर क्रिप्टो का रिटर्न नेगेटिव में रहा है, वहीं रिवर क्रिप्टो में 200 फीसदी से ज्यादा उछाल आया है। एक महीने पहले इसकी कीमत 9 डॉलर से भी कम थी। अब यह करीब 26 डॉलर है। ऐसे में इसमें एक महीने में करीब 205 फीसदी की तेजी आई है। अगर आपने एक महीने पहले इसमें एक लाख रुपये निवेश किए होते तो उनकी वैल्यू आज 3 लाख रुपये से ज्यादा होती। जब भी बात क्रिप्टोकरेंसी की आती है, बिटकॉइन को छोड़ नहीं सकते। हालांकि पिछला समय दुनिया की इस सबसे लोकप्रिय क्रिप्टो के लिए बुरा गुजरा है। सोमवार दोपहर करीब 1:30 बजे यह गिरावट के साथ करीब 68,400 डॉलर पर कारोबार कर रही थी। पिछले एक हफ्ते में इसमें करीब 7 फीसदी की गिरावट आई है। हालांकि एक महीने में इसमें मामूली तेजी देखी गई है। यह तेजी एक फीसदी से कम है। ऐसे में एक महीने के रिटर्न में रिवर के मुकाबले बिटकॉइन काफी पीछे रह गई है।

माता पिता को जरूर जान लेनी चाहिए चाणक्य नीति की ये बाते, बच्चों के बन पाएंगे अच्छे दोस्त

आचार्य चाणक्य ने अपनी नीति में जीवन को सफल, अनुशासित और सुखमय बनाने के लिए कई बातों का जिक्र किया है। चाणक्य नीति में बताए गए धर्म, अर्थ और मानव व्यवहार पर आधारित सिद्धांतों का अनुसरण करके व्यक्ति अपने जीवन को सफल बना सकता है। आचार्य चाणक्य ने अपनी नीति में माता-पिता के कर्तव्यों के बारे में भी विस्तार से बताया है। इसमें उन्होंने कुछ माता-पिता को बच्चों के लिए शत्रु समान बताया है।

पुत्राश्च विविधैः शीलैर्नियोज्याः सततं बुधैः।
नीतिज्ञाः शीलसम्पन्ना भवन्ति कुलपूजिताः ।।

माता-पिता के कर्तव्य

चाणक्य नीति के दूसरे अध्याय के 10वें श्लोक में कहा गया है कि बुद्धिमान लोगों को अपने पुत्र और पुत्रियों को अनेक प्रकार के अच्छे गुणों से युक्त करना चाहिए। उन्हें अच्छे कार्यों में लगाना चाहिए। क्योंकि नीति जानने वाले और अच्छे गुणों से युक्त सज्जन स्वभाव वाले व्यक्ति ही कुल में पूजनीय होते हैं। इस श्लोक में आचार्य चाणक्य कहते हैं कि बचपन में बच्चों को जैसी शिक्षा दी जाएगी, उनके जीवन का विकास उसी प्रकार का होगा। इसलिए माता-पिता का कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को ऐसे मार्ग पर चलाएं, जिससे उनमें चातुर्य के साथ-साथ शील स्वभाव का भी विकास हो। गुणी व्यक्तियों से ही कुल की शोभा होती है।

माता शत्रु पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ।।

बच्चों के शत्रु समान होते हैं ये माता-पिता दूसरे अध्याय के 11वें श्लोक में कहा गया है कि वे माता-पिता बच्चों के शत्रु समान होते हैं, जिन्होंने अपने बच्चों को पढ़ाया-लिखाया नहीं। क्योंकि अनपढ़ बालक विद्वानों के समूह में शोभा नहीं पाता और उसका हमेशा तिरस्कार होता है। विद्वानों के समूह में उसका अपमान उसी प्रकार होता है जैसे हंसों के झुंड में बगुले की स्थिति होती है।

आचार्य चाणक्य कहते हैं कि केवल मनुष्य जन्म लेने से ही कोई बुद्धिमान नहीं हो जाता। उसके लिए शिक्षित होना अत्यन्त आवश्यक है। शक्ल-सूरत, आकार-प्रकार तो सभी मनुष्यों का एक जैसा होता है, लेकिन उनकी बुद्धि से ही अंतर पता चलता है। जिस प्रकार सफेद बगुला सफेद हंसों में बैठकर हंस नहीं बन सकता। उसी प्रकार अशिक्षित व्यक्ति शिक्षित व्यक्तियों के बीच में बैठकर शोभा नहीं पा सकता। इसलिए माता-पिता का कर्तव्य है कि वे बच्चों को ऐसी शिक्षा दें, जिससे वे समाज की शोभा बन सकें।

विघ्नहर्ता को प्रसन्न करने के लिए करें ये मंत्र जाप, खुलेंगे सफलता के रास्ते

भगवान गणेश को विघ्नहर्ता और सुख-समृद्धि देने वाले देवता माना जाता है। मान्यता है कि उनके मंत्रों का नियमित जाप करने से जीवन की बाधाएं दूर होती हैं और सफलता के रास्ते खुलते हैं। खासतौर पर किसी नए काम की शुरुआत से पहले गणेश मंत्र का जाप करना बहुत शुभ माना जाता है। कहते हैं कि सच्चे मन और श्रद्धा से किए गए मंत्र जाप से मानसिक शांति मिलती है, आत्मविश्वास बढ़ता है और नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है। साथ ही, इससे जीवन में सकारात्मक बदलाव आते हैं और व्यक्ति अपने लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त कर पाता है। तो आइए जानते हैं गणेश जी के इन मंत्रों के बारे में।

भगवान गणेश के शक्तिशाली मंत्र

ॐ गं गणपतये नमः।

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धितायं।
नागाननाथ श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥

एकदन्ताय शुद्धाय सुमुखाय नमो नमः ।
प्रपन्न जनपालाय प्रणतार्ति विनाशिने ॥

ॐ एकदन्ताय विद्धमहे, वक्रतुण्डाय धीमहि,
तन्नो दन्ति प्रचोदयात्॥

ॐ नमो सिद्धि विनायकाय सर्व कार्य कर्त्रे सर्व विघ्न प्रशमनाय सर्व राज्य वश्यकरणाय सर्वजन सर्वस्त्री पुरुष आकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ॥

महाकर्णाय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दंती प्रचोदयात्।।

गजाननाय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दंती प्रचोदयात्।।

ॐ ग्लौम गौरी पुत्र, वक्रतुंड, गणपति गुरु गणेश।
ग्लौम गणपति, ऋद्धि पति, सिद्धि पति. करो दूर क्लेश ।।

गजाननाय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दंती प्रचोदयात्।।

श्री वक्रतुण्ड महाकाय सूर्य कोटी समप्रभा
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व-कार्येशु सर्वदा॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा॥ एकदन्ताय विद्महे । वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

चांदी के गिलास में पानी पीने के फायदे, चंद्रमा होगा मजबूत, वैदिक ज्योतिष से जानें कैसे करें सेवन

चांदी धातु का वैदिक ज्योतिष के साथ-साथ आयुर्वेद में भी खास महत्व है। इसे बेहद पवित्र माना गया है जो शुद्धता, शांति और चंद्रमा से संबंधित है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार, चांदी धातु का संबंध चंद्रमा से होता है। लाल किताब में भी चांदी के गिलास में पानी पीना बहुत अच्छा माना गया है। वैदिक ज्योतिष और ज्योतिष एक्सपर्ट डॉ. मधु प्रिया प्रसाद के अनुसार, चांदी के गिलास में रखे पानी का सेवन करने से सकारात्मकता बढ़ती और जातक को मानसिक शांति महसूस होती है। साथ ही, शास्त्रों में चंद्रमा को मजबूत करने के लिए चांदी धातु का विशेष महत्व बताया गया है। ऐसे में आइए विस्तार से जानें चांदी के गिलास में पानी पीने के फायदे और इसकी विधि।

चांदी का संबंध चंद्रमा से ज्योतिषशास्त्र में चांदी का संबंध चंद्रमा से माना गया है, जो मन, मानसिक स्थिति, शांति, भावनाओं और स्वास्थ्य कारक है। अगर किसी जातक की जन्म कुंडली में चंद्रमा की स्थिति कमजोर या पीड़ित हो तो ज्योतिष एक्सपर्ट मधु प्रिया के अनुसार, उसे चंद्र दोष का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में चिंता, भावनाओं में उतार-चढ़ाव, तनाव आदि समस्याएं परेशान करने लगती हैं। ऐसे में चंद्रमा को मजबूत करने के लिए वैदिक ज्योतिष व लाल किताब में कई उपायों का वर्णन मिलता है। जिनमें से एक है चांदी के पात्र में जल का सेवन करना।

चांदी के गिलास में पानी पीने के फायदे मान्यता है की चांदी जन्म कुंडली में चंद्रमा की स्थिति को मजबूत करने में सहायक होता है। इसके प्रयोग से आंतरिक शांति को बढ़ सकती है और इसे नकारात्मक ऊर्जा को भी दूर रखने में सहायक माना गया है। चांदी के गिलास में पानी पीने से मानसिक स्पष्टता को बढ़ावा मिलता है और भावनाओं को संतुलित करने में भी मदद मिलती है। अगर आप अत्यधिक चिंतित व परेशान रहते हैं तो यह उपाय करके देख सकते हैं। यह अधिक चिंता और तनाव से भी राहत दिला सकता है।

मान्यता है की चांदी में रोगाणुरोधी गुण होते हैं। ऐसे में इसके पात्र में रखा पानी पीने से यह तीन दोष पित्त, कफ और वात को संतुलित रखता है। यह धातु चंद्रमा को मजबूत करने के साथ-साथ संबंधों में गहराई और करुणा को भी बढ़ावा देता है। चांदी के गिलास में पानी पीने से मानसिक शांति महसूस होती है और यह सकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करता है।

चांदी के गिलास में पानी कैसे पिएं? वैदिक ज्योतिष के अनुसार, चांदी के गिलास में पानी पीने के लिए शुद्ध व अच्छी गुणवत्ता वाली चांदी के पात्र का प्रयोग करना चाहिए। रात के समय चांदी के गिलास को अच्छी तरह साफ करके उसमें स्वच्छ जल भरकर रातभर छोड़ें। ऐसा करने से चांदी धातु और चंद्रमा के गुण जल में समा सकें। चांदी के पात्र में कम से कम 6 से 8 घंटे तक जल को जरूर रखना चाहिए। इसके बाद, अगले दिन सुबह के समय चांदी के गिलास में जल का सेवन करें। ज्योतिष एक्सपर्ट डॉ. मधु प्रिया के अनुसार, बेहतर परिणाम और चंद्रमा की स्थिति को मजबूत करने के लिए खाली पेट जल का सेवन करते समय मन ही मन में 'ओम सोम सोमाय नमः' मंत्र का जाप करना चाहिए। चांदी के गिलास में पानी किन लोगों को पीना चाहिए? अगर कुंडली में चंद्रमा वृश्चिक राशि में हो, निम्न राशि में हो या चंद्रमा शनि की युति से विष योग बन रहा हो तो चांदी के पात्र में पानी का सेवन किया जा सकता है। मान्यता है की कर्क, वृश्चिक और मीन राशि के जातकों के लिए चांदी के गिलास में पानी पीना बेहद लाभदायक होता है। ये तीनों राशियां जल तत्व से संबंधित होती हैं। ऐसे में चांदी के पात्र में पानी पीना शुभ हो सकता है। डॉ मधु प्रिया और आयुर्वेद के अनुसार, चांदी धातु नींद संबंधी समस्या और हार्मोनल असंतुलन से राहत दिलाने में सहायक होता हैं। हालांकि, इस उपाय को करने से पहले किसी कुशल ज्योतिषी से अपनी कुंडली में चंद्रमा की स्थिति जरूर दिखवानी चाहिए।

आर्थिक राशिफलः बुध तकनीकी कार्यों में लाएंगे मजबूती, शनि-गुरू के प्रभाव से निवेश में लाभ के योग

मेष राशि लाभ भाव में बुधदेव की सीधी चाल का अर्थ है कि आपका नेटवर्किंग कौशल अब आपकी सबसे बड़ी ताकत बन गया है। आज का दिन वित्तीय अध्ययन को अंतिम रूप देना या किसी कठिन तकनीकी चरण में अपनी टीम का नेतृत्व करना के लिए बहुत उपयुक्त है। ध्यान रहे, बारहवें भाव के सूर्यदेव कुछ योजनाओं को अभी गुप्त रख सकते हैं। वृषभ राशि के चंद्रदेव यह सुनिश्चित करेंगे कि आपके वर्तमान कार्यों को कार्यक्षेत्र में उचित सम्मान और आर्थिक महत्व मिले। आर्थिकः आज आर्थिक संभावनाएं काफी खूबसूरत नजर आ रही हैं। आपके धन प्रवाह में आ रही रुकावटें अब दूर हो गई हैं, लेकिन वृषभ के चंद्रमा आपको सट्टेबाजी के बजाय मध्यम और स्थिर वृद्धि के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

वृषभ राशि पेशेवर रूप से आज आप सफलता के शिल्पकार बने हुए हैं। प्रतिष्ठा के भाव में बुधदेव के होने से आपकी साख और सार्वजनिक प्रोजेक्ट्स अब आपके सबसे मजबूत उपकरण हैं। आज बड़ी जिम्मेदारियों का नेतृत्व करने, महत्वपूर्ण कॉन्ट्रैक्टों पर हस्ताक्षर करने या लंबी अवधि की रणनीति पेश करने में संकोच न करें।

मिथुन राशि आज आप एक शांत रणनीतिकार की भूमिका में हैं। ज्ञान के भाव में बुधदेव की सीधी गति का अर्थ है कि आपका शोध और अंतर्राष्ट्रीय संपर्क आपकी सफलता की कुंजी है। किसी बैकएंड प्रोजेक्ट को अंतिम रूप देने या सप्ताह के अंत में होने वाली प्रेजेंटेशन की तैयारी के लिए आज का समय निकाले। दसवें भाव के सूर्यदेव आपको दूसरों की बातचीत में रखेंगे जिससे आपकी नींव और मजबूत होगी। आर्थिकः आपकी आर्थिक संभावनाएं आज उन संपत्तियों पर केंद्रित है

कर्क राशि परिवर्तन के भाव में बुधदेव की सीधी चाल बताती है कि आपका शोध और संसाधनों का प्रबंधन ही आपकी वास्तविक शक्ति है। किसी भी साझेदारी के सौदे को अंतिम रूप देने या कॉम्प्लेक्स लॉजिस्टिक में टीम का मार्गदर्शन करने के लिए आज का दिन चुनें। नौवें भाव के सूर्यदेव आपको बड़े लक्ष्य पर केंद्रित रखेंगे। वृषभ राशि के चंद्रमा यह सुनिश्चित करना चाहेंगे कि आपके सामाजिक संपर्क सम्मानजनक रहें और उनका ठोस लाभ प्राप्त हो। आर्थिकः आज विशेष रूप से पैसिव इन्कम या संयुक्त उपक्रमों के मामले में आर्थिक स्थिति बेहतर है। साझा संसाधनो में आने वाली बाधाएं अब समाप्त हो चुकी हैं,

सिंह राशि नवम भाव में बुधदेव की सीधी चाल का अर्थ है कि आपका सामूहिक प्रयास ही आपकी सबसे बड़ी ताकत हैं। उच्च स्तरीय बैठकों का नेतृत्व करने, महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने या किसी सार्वजनिक प्रोजेक्ट को लॉन्च करने के लिए आज के दिन का उपयोग करें। आठवें भाव के सूर्यदेव आपको बैकएंड ऑडिट में व्यस्त रख सकते हैं। आर्थिकः आज आर्थिक लाभ आपकी प्रतिष्ठा से जुड़ा है। वेतन वृद्धि, बिजनेस कॉन्ट्रैक्ट या अपने पेशेवर ब्रांड में निवेश को अंतिम रूप देने के लिए आज एक श्रेष्ठ दिन है।

कन्या राशि पेशेवर तौर पर आज आप एक दूरदर्शी विशेषज्ञ की भूमिका में हैं। सेवा के भाव में बुधदेव की सीधी चाल का मतलब है कि आपके तकनीकी कौशल और दिशानिर्देश अब सबसे बड़े काम का हिस्सा हैं। किसी अंतर्राष्ट्रीय प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिए या कानूनी दस्तावेजों को संभालने के लिए दिन का उपयोग करें। सातवें भाव के सूर्यदेव आपको बातचीत में व्यस्त रखेंगे, जबकि चंद्रमा आपके सिद्धांतों को सम्मान दिलाएंगे। आर्थिकः आर्थिक संभावनाएं आज लंबी अवधि के निवेश पर केंद्रित हैं। अंतर्राष्ट्रीय ट्रांसफर, कानूनी शुल्क या शैक्षिक लागत की समीक्षा करने के लिए यह एक बेहतरीन दिन है।

तुला राशि आज आप एक रणनीतिक लेखा परीक्षक के रूप में उभरेंगे। रचनात्मकता के भाव में बुधदेव के मार्गी होने से आपके अनुठे विचार और पिच अब आपके सबसे मजबूत हथियार हैं। गोपनीय शोध को संभालने या उच्च-जोखिम वाले वित्तीय डेटा को मैनेज करने के लिए आज का दिन सही है।

आर्थिकः आर्थिक दृष्टि से आज ध्यान बैकएंड प्रबंधन पर रहेगा। टैक्स, विरासत या संयुक्त बैंक खाते की समीक्षा करने के लिए यह एक उत्कृष्ट दिन है। बुधदेव के मार्गी होने से नौकरी या निवेश में आ रही तकनीकी समस्याएं अब दूर हो रही हैं। वृश्चिक राशि व्यावसायिक रूप से आज आप एक रणनीतिकार और वार्ताकार के रूप में चमकेंगे। आर्थिकः आठवें भाव में बृहस्पतिदेव के आशीर्वाद से आज आर्थिक संभावनाएं संयुक्त स्थिरता पर केंद्रित हैं। गृह ऋण को अंतिम रूप देने, साझेदारी के अच्छे मुनाफे की समीक्षा करने या घरेलू कर्ज का भुगतान करने के लिए यह एक अच्छा दिन है।

धनु राशि पेशेवर रूप से आज आप कार्य कुशलता के विशेषज्ञ हैं। कौशल के भाव में बुधदेव की सीधी चाल का अर्थ है कि आपके तकनीकी कार्यप्रवाह और नेटवर्किंग की क्षमताएं आपकी सफलता के द्वार खोल देंगी। ईमेल के उत्तर भेजने, स्थानीय सौदों को अंतिम रूप देने या नई फाइलिंग प्रणाली लागू करने के लिए दिन का सदुपयोग करें। वृषभ राशि के चंद्रमा यह सुनिश्चित करेंगे कि आपके दैनिक कार्य को सम्मान और परिणाम मिले।

आर्थिकः आर्थिक संभावनाएं आज आपके अर्जित आय पर केंद्रित हैं। दैनिक कार्य की समीक्षा करना या अपने व्यापार के लिए उच्च गुणवत्ता वाले सामान में निवेश करने के लिए एक शानदार दिन है। बुधदेव के मार्गी होने से परिवहन से जुड़े कागजात या स्थानीय बैंकिंग में आ रही तकनीकी त्रुटियां अब समाप्त हो गई हैं।

मकर राशि धन भाव में बुधदेव की सीधी चाल का अर्थ है कि आपकी वित्तीय बातचीत और संसाधन प्रबंधन आपकी सबसे बड़ी ताकत है। किसी अनुठे विचार को पेश करने या हाई-मार्केट वित्तीय योजना के लिए आज के दिन का उपयोग करें। आर्थिकः आर्थिक संभावनाएं आज दिन का मुख्य आकर्षण हैं। वृषभ राशि के चंद्रमा आपको धीमी और स्थिर वृद्धि के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। अपने निजी खातों का ऑडिट करने या किसी रचनात्मक उद्यम के लिए बेहतर उपकरणों में निवेश करने के लिए यह एक बेहतरीन दिन है।

कुंभ राशि आपकी अपनी राशि में बुधदेव का मार्गी होना यह दर्शाता है कि आपका पर्सनल ब्रांड और बातचीत करने का तरीका ही आपकी सबसे बड़ी शक्ति है। घर से काम करने, गोपनीय बैकएंड वर्क को संभालने या लंबी अवधि की सुरक्षा रणनीतिओं की योजना बनाने के लिए आज का दिन चुनें। आर्थिकः आर्थिक संभावनाएं आज घरेलू मूल्य और संपत्ति पर ध्यान दिलाता है। अपने घर के बजट का ऑडिट करना और संपत्ति में निवेश करने का एक अच्छा दिन है। बुधदेव के मार्गी होने से आपके व्यक्तिगत डिजिटल

मीन राशि अदृश्य भाव में बुधदेव की सीधी चाल का मतलब है कि आपका बैकएंड रिसर्च और निजी रणनीति अब आपके सबसे मजबूत उपकरण हैं। महत्वपूर्ण संदेश भेजने, अल्पकालिक सौदों पर हस्ताक्षर करने या स्थानीय सहयोगियों के साथ नेटवर्क बनाने के लिए आज के दिन का उपयोग करें। पहले भाव के सूर्यदेव आपकी आधिकारिक छवि निखारेंगे, जिससे आपकी दैनिक बातचीत से ठोस परिणाम प्राप्त होंगे।

अखंड ज्योति में रुई की बत्ती एक बड़ी गलती जानें वास्तु के ये अचूक नियम और लाभ

नवरात्रि के पर्व के दौरान हर घर में देवी दुर्गा की विधिवत रुप से पूजा की जाती है। घरों में अखंड ज्योति भी जलाई जाती है। इस नवरात्रि में आपके घर में अखंड दीपक रखा गया होगा और कोशिश रहती है कि यह नौ दिनों तक जलता रहे। लेकिन इसके लिए कुछ जरुरी वास्तु नियमों का पालन करना बेहद जरुरी माना जाता है। आइए आपको इस लेख में घर के सही दिशा में अखंड ज्योति जलाने के बारे में बताएंगे।

अखंड ज्योति के लिए सबसे उत्तम दिशा वास्तु शास्त्र के मुताबिक, पूजा घर में दीपक को सही दिशा में रखने से काफी गहरा प्रभाव पड़ता है। अगर आप अखंड ज्योति रखने के लिए सबसे जरुरी है दिशा दक्षिण-पूर्वी मानी जाती है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, यह अग्नि की दिशा है, इसलिए यहां ज्योत जलाने से घर के सदस्यों की सुख-समृद्धि में वृद्धि होती है और शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। यदि आपके घर में ये दिशा नहीं पड़ रही है, तो ऐसे में आप पूर्व दिशा में भी रख सकते हैं। इससे आयु और आरोग्य में वृद्धि होती है।

अंखड ज्योति के लिए लौ किसकी बनाएं? ज्यादातर लोगों को पता नहीं होता है कि अखंड ज्योति के लिए लौ किसकी बनाएं। ऐसे में लोग अखंड ज्योत के लिए रुई की बत्ती बनाते हैं, लेकिन आप ये बड़ी गलती कर रहे है, इसके लिए आपको लौ को कलावे से तैयार करके दीपक में नौ दिन के हिसाब से लगा दें, ताकि ये बार-बार बदलनी न पड़ें। कलावे की लौ वैसे भी माता रानी की पूजा के लिए शुभ मानी जाती है। फिर आप इसी से दीपक को जलाएं। इसके साथ ही इसके जलने का ध्यान रखें। ऐसा करने से आपके घर का वास्तु अच्छा रहेगा। इसके साथ ही जीवन की सारी परेशानियां कम हो जाएंगी।

अखंड ज्योति के क्या लाभ होते हैं? वास्तु के अनुसार, विधिवत रुप से जलाई गई अखंड ज्योति घर के वास्तु दोषों को शांत करती है। इसके साथ ही यह घर के वातावरण से राहु-केतु के नकारात्मक प्रभाव को कम करती है और परिवार के सदस्यों के बीच सामंजस्य बनाता है। जलती हुई ज्योति ज्ञान और प्रकाश का प्रतीक है, जो मानसिक तनाव को दूर करके मन को शांति प्रदान करती है।

भइया, आजु त राम लला के जनम के बड़का उत्सव है, चलऽ सब मिलि के राम नाम गाईं, जय सियाराम

अवध की गूंज सारनी में राम नाम का संकल्प भव्य रामनवमी शोभायात्रा 27 मार्च को निकलेगी नगर भ्रमण पर

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

सारनी।सारनी नगर में प्रभु श्रीराम के पावन जन्मोत्सव रामनवमी को लेकर भक्तिभाव का ज्वार उमड़ पड़ा है। सोमवार को श्री राम मंदिर प्रांगण में धर्म,संस्कृति और सामाजिक सरोकारों से जुड़े रामभक्तों की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित हुई,जिसमें 27 मार्च को निकलने वाली भव्य शोभायात्रा को लेकर विस्तृत रूपरेखा तैयार की गई। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि शोभायात्रा 27 मार्च को सायं 4 बजे श्री राम मंदिर प्रांगण से प्रारंभ होगी। यह शोभायात्रा केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम की जीवन मर्यादाओं, आदर्शों और सनातन संस्कृति के वैभव का जीवंत उत्सव होगी।इस वर्ष की शोभायात्रा में चार भव्य झांकियां आकर्षण का केंद्र रहेंगी। इनमें महाकाल मंदिर उज्जैन की दिव्य झांकी विशेष रूप से श्रद्धालुओं का मन मोह लेगी। इसके अतिरिक्त श्री राम मंदिर की झांकी,राम बोलो समिति की प्रस्तुति एवं पुरानी सारनी से प्रतिवर्ष लाई जाने वाली पारंपरिक झांकी भी इस आयोजन को अलौकिक स्वरूप प्रदान करेंगी।शोभायात्रा में बैंड-बाजा,नगाड़े,ढोल-ताशे और भक्तिमय धुनों से सुसज्जित डीजे की गूंज के बीच रामनाम का संकीर्तन वातावरण को जय सियाराम के उद्घोष से गुंजायमान करेगा। मानो अयोध्या की पावन गलियों की प्रतिध्वनि सारनी की सड़कों पर सजीव हो उठे का हो भइया,आजु त राम लला के जनम के बड़का उत्सव है,चलऽ सब मिलि के राम नाम गाईं,जय सियाराम अवधी और अयोध्या क्षेत्र की मधुर बोली में रामभक्ति का यह रंग पूरे नगर को आध्यात्मिकता से सराबोर करेगा।निर्धारित मार्ग के अनुसार शोभायात्रा श्री राम मंदिर से प्रारंभ होकर दुर्गा मंदिर,साईं मंदिर,बाबा मठारदेव महाराज मंदिर, बाजार चौक,जगन्नाथ मंदिर, नगर पालिका चौक,शीतला माता मंदिर होते हुए पुनः नगर पालिका चौक पहुंचेगी। इसके पश्चात सतना लाइन, शिव कल्याणेश्वर मंदिर और शॉपिंग सेंटर मार्ग से होते हुए पुनःश्री राम मंदिर प्रांगण में समापन होगा। संपूर्ण यात्रा में लगभग 7 से 8 घंटे का समय लगेगा,जिसमें नगर का कोना-कोना राममय हो उठेगा।आयोजक समिति ने बताया कि इस बार शोभायात्रा को और अधिक भव्य एवं आकर्षक बनाने के लिए कई नवाचार किए जा रहे हैं,जिससे यह आयोजन नगर के इतिहास में एक नई पहचान स्थापित करेगा। सुरक्षा व्यवस्था को लेकर भी विशेष ध्यान रखा गया है। स्थानीय पुलिस प्रशासन के साथ-साथ सामाजिक संगठनों के सदस्य भी सक्रिय भूमिका निभाएंगे,ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो। श्री राम मंदिर प्रबंधन एवं आयोजन समिति ने नगर के सभी 13 वार्डों के श्रद्धालुओं से भावपूर्ण अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर इस दिव्य आयोजन को सफल बनाएं और प्रभु श्रीराम के जन्मोत्सव को एक भव्य जन-आस्था पर्व के रूप में मनाएं। समिति के पदाधिकारी ने यह भी जानकारी दी कि पिछले 11 वर्षों से नियमित तौर से प्रभु श्री राम की शोभायात्रा चैत्र नवरात्र के अवसर पर निकाली जा रही है जो जिला स्तर पर अपनी पहचान बनने जा रहा है।

विद्यार्थियों के अनुशासन, आत्मविश्वास और उत्कृष्ट प्रदर्शन की प्रशंसा की गई

नन्हे कदमों से बड़े सपनों की उड़ान संत फ्रांसिस स्कूल में यूकेजी दीक्षांत समारोह बना यादगार पल

दैनिक कारखाने का सफर। मुलताई

शिक्षा के आंगन में जब नन्हे कदम आत्मविश्वास की पहली सीढ़ी चढ़ते हैं,तो वह पल केवल एक समारोह नहीं बल्कि उज्ज्वल भविष्य की शुरुआत बन जाता है। इसी भावनात्मक और गौरवपूर्ण वातावरण में संत फ्रांसिस सीनियर सेकेंडरी स्कूल,सारनी में यूकेजी का दीक्षांत समारोह बड़े हर्षोल्लास और गरिमा के साथ आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में नन्हे-मुन्ने विद्यार्थियों की चमकती मुस्कान और उत्साह ने पूरे परिसर को उल्लास से भर दिया।बच्चों को उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया गया। जिससे उनके आत्मविश्वास को नई उड़ान मिली।विद्यालय की मैनेजर सिस्टर प्रसन्ना ने अपने प्रेरणादायक उद्बोधन में बच्चों को भविष्य के चमकते सितारे बताते हुए उनकी प्रतिभा और मेहनत की सराहना की है। उन्होंने कहा कि ये नन्हें कदम आने वाले कल की मजबूत नींव बन सकते हैं जो समाज में एक नया आयाम स्थापित कर सकते हैं।वहीं प्राचार्या सिस्टर सजना ने विद्यार्थियों के अनुशासन,आत्मविश्वास और उत्कृष्ट प्रदर्शन की प्रशंसा करते हुए अभिभावकों के सहयोग को सफलता का आधार बताया।उन्होंने कहा कि बच्चों की उपलब्धियों में घर और विद्यालय दोनों की साझेदारी महत्वपूर्ण होती है।

समारोह में शिक्षकों के अथक परिश्रम,समर्पण और स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन की विशेष सराहना की गई।उनके निरंतर प्रयासों ने ही विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को संभव बनाया और समारोह को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई।विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धियों के आधार पर मार्कशीट एवं विभिन्न श्रेणियों में पुरस्कार प्रदान किए गए। पुरस्कार पाकर बच्चों के चेहरे पर खुशी और गर्व की झलक साफ दिखाई दी।कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण बच्चों द्वारा प्रस्तुत रंगारंग एवं सुसज्जित नृत्य रहा,जिसने उपस्थित अतिथियों और अभिभावकों का मन मोह लिया। हर प्रस्तुति में मासूमियत और प्रतिभा का अद्भुत संगम देखने को मिला।अभिभावकों एवं विद्यालय स्टाफ की गरिमामयी उपस्थिति ने इस आयोजन को और भी भव्य बना दिया। यह समारोह न केवल बच्चों के लिए एक उपलब्धि का क्षण बना, बल्कि उनके जीवन के नए अध्याय की प्रेरणादायक शुरुआत भी साबित करने की ओर इशारा करता दिखाई दे रहा है।

शहादत की ज्योति और सफलता का संकल्प सारनी महाविद्यालय में शहीद दिवस पर जागी नई चेतना

भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के बलिदान से प्रेरित युवाओं को मिला सफलता और तनावमुक्त परीक्षा का मंत्र

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

वीर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की अमर गाथाओं से गूंजता वातावरण और भविष्य निर्माण के संकल्प से भरा उत्साह ऐसा प्रेरणादायी दृश्य रहा वीर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सरदार विष्णु सिंह उईके शासकीय महाविद्यालय सारनी में जहां 23 मार्च शहीद दिवस के अवसर पर सफलता पर संवाद कार्यक्रम एवं तनाव प्रबंधन कार्यशाला का गरिमामय आयोजन किया गया।कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव द्वारा भोपाल स्थित कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय सभागार से प्रसारित सफलता पर संवाद का सीधा प्रसारण महाविद्यालय के कक्ष क्रमांक 26 में प्रोजेक्टर के माध्यम से विद्यार्थियों को दिखाया गया।इस संवाद में सिविल सेवा परीक्षा में चयनित अभ्यर्थियों ने सफलता के मूल मंत्र समय प्रबंधन लक्ष्य निर्धारण तथा चुनौतियों से संघर्ष करते हुए सफलता पाने के सूत्र साझा किए।महाविद्यालय के प्राचार्य

प्रदीप पंद्राम ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता इसके लिए निरंतर परिश्रम अनुशासन और धैर्य आवश्यक है।उन्होंने युवाओं से अपनी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में लगाकर लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर होने का आह्वान किया।कार्यक्रम का सबसे भावुक और प्रेरणादायी क्षण वह रहा जब भगत सिंह,राजगुरु और सुखदेव के अद्वितीय बलिदान को स्मरण किया गया।वक्ताओं ने बताया कि कैसे मात्र 23-24 वर्ष की अल्पायु में इन क्रांतिकारियों ने मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों का बलिदान दे दिया।भगत सिंह ने न केवल अंग्रेजी हुकूमत को चुनौती दी,बल्कि अपने विचारों से युवाओं में क्रांति की चेतना जगाई।राजगुरु की वीरता और साहस तथा सुखदेव की संगठन क्षमता ने स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी।इन तीनों अमर शहीदों ने यह सिद्ध कर दिया कि देशभक्ति केवल भावना नहीं, बल्कि सर्वोच्च त्याग की पराकाष्ठा है। उनके इंकलाब जिंदाबाद के उद्घोष आज भी युवाओं के हृदय में जोश और देशप्रेम का संचार करते हैं।कार्यक्रम के दूसरे चरण में परीक्षा के दौरान तनाव रहित कैसे रहें विषय पर विशेष कार्यशाला आयोजित की गई। इस दौरान विद्यार्थियों को मानसिक स्वास्थ्य, सकारात्मक सोच समय प्रबंधन और समूह अध्ययन के महत्व के बारे में विस्तारपूर्वक बताया गया। प्राचार्य ने विद्यार्थियों को सलाह दी कि वे स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करें नियमित अध्ययन की आदत विकसित करें सहपाठी समूह में चर्चा कर विषय की समझ बढ़ाएं सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखें उन्होंने कहा कि संतुलित मानसिक स्थिति ही सफलता की कुंजी है।इस प्रेरणादायी आयोजन में महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकगण डॉ. हरिश लोखण्डे,अनिल तुमड़ाम,अनुज हलदार,डॉ. राजेश हनोते,अर्चना महाले, गंगा चौरे,उत्तम साहू,डॉ. गोलमन अहाके,डॉ.दसरू यदुवंशी,निकिता सोनी, लक्ष्मी नागले,अनीता नागले, दिनकर लिखितकर,मोहन पंवार सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।शहीदों की अमर गाथा और सफलता के व्यावहारिक सूत्रों से सुसज्जित यह आयोजन विद्यार्थियों के लिए न केवल प्रेरणा का स्रोत बना,बल्कि उनके भीतर राष्ट्रप्रेम, आत्मविश्वास और लक्ष्य के प्रति दृढ़ संकल्प की नई ज्योति भी प्रज्वलित कर गया है।

9 महीने से बिना वेतन भूख से जूझते मजदूर, सिस्टम बना मूकदर्शक मजदूर यूं ही भूख और बेबसी के बीच संघर्ष करते रहेंगे

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

सरकारी दूरसंचार व्यवस्था की रीढ़ माने जाने वाले मजदूर आज खुद ही बदहाल जिंदगी जीने को मजबूर हैं।जिले में भारत संचार निगम लिमिटेड के तहत आउटसोर्सिंग से काम कर रहे 25 कर्मचारियों को पिछले 9 महीनों से वेतन नहीं मिला,जिससे उनके सामने परिवार का पेट पालना भी मुश्किल हो गया है।सारनी,घोड़ाडोंगरी, मुलताई,चिचोली,भैंसदेही और बैतूल क्षेत्रों में कार्यरत ये मजदूर टावर मेंटेनेंस और अन्य तकनीकी जिम्मेदारियां निभा रहे हैं।इन्हें पीएनजी क्रिएटिव पावर इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया के ठेकेदार के माध्यम से रखा गया है,जहां श्रम कानूनों की खुलेआम अनदेखी का आरोप लग रहा है।बताया जा रहा है कि कंप्यूटर ऑपरेटर को मात्र 5 हजार रुपए और टावर

मेंटेनेंस कर्मचारियों को सात हजार तक ही भुगतान तय किया गया।वह भी नियमित नहीं। जुलाई 2025 से अब तक का लगभग 15 लाख 75 हजार,वेतन बकाया है, जो इन 25 मजदूरों को मिलना बाकी है।हालात इतने खराब हो चुके हैं कि कई मजदूरों के घरों में चूल्हा तक नहीं जल पा रहा।कुछ मजदूरों ने बताया कि वे अब तक उधार लेकर परिवार चला रहे थे,लेकिन अब दुकानदारों ने भी उधार देना बंद कर दिया है।ऐसे में परिवार के सामने भूखमरी की स्थिति बन गई है।सबसे गंभीर बात यह है कि इस पूरे मामले में न तो श्रम विभाग और न ही जिला प्रशासन सक्रिय नजर आ रहा है। मजदूरों का आरोप है कि बार-बार शिकायत करने के बाद जिला कलेक्टर,श्रम अधिकारी और बीएसएनएल के जिम्मेदार अधिकारी इस ओर ध्यान देने को तैयार नहीं हैं।सवाल यह है कि जब एक सरकारी कंपनी में काम करने वाले मजदूर ही अपने हक के लिए भटक रहे हैं,तो निजी क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिकों की स्थिति कितनी भयावह होगी,इसका अंदाजा सहज लगाया जा सकता है।

अब देखना यह है कि मजदूरों की इस पुकार पर प्रशासन कब जागेगा,या फिर ये मजदूर यूं ही भूख और बेबसी के बीच संघर्ष करते रहेंगे।

महंगाई के खिलाफ चिचोली में कांग्रेस का प्रदर्शनः पेट्रोल-डीजल और गैस पर घेरा, अधूरी सड़क का मुद्दा भी उठाया; आंदोलन की चेतावनी

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल के चिचोली में ब्लॉक कांग्रेस शहर अध्यक्ष विजय आर्य के नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने पेट्रोल-डीजल और एलपीजी गैस की बढ़ती कीमतों के विरोध में प्रदर्शन किया। इस दौरान राष्ट्रपति के नाम एक ज्ञापन तहसीलदार को सौंपा गया। ज्ञापन में कांग्रेसियों ने कहा कि पेट्रोल-डीजल और रसोई गैस की लगातार बढ़ती कीमतें आम जनता की कमर तोड़ रही हैं। महंगाई के कारण गरीब और मध्यम वर्गीय परिवारों को अपनी रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करने में कठिनाई हो रही है। उन्होंने केंद्र सरकार से इन कीमतों में तत्काल राहत देने की मांग की।

कार्यकर्ताओं ने चिचोली से भीमपुर तक बन रही सड़क के अधूरे निर्माण का मुद्दा भी उठाया। उन्होंने बताया कि लोक निर्माण विभाग द्वारा शुरू किया गया यह कार्य पिछले लगभग दो साल से अधूरा पड़ा है। करीब 10 किलोमीटर तक खुदाई होने के बाद काम बंद कर दिया गया है। सड़क का काम अधूरा होने से लोगों को आवागमन में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इसके कारण दुर्घटनाओं का खतरा भी बढ़ गया है। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने चेतावनी दी कि यदि इन समस्याओं का शीघ्र समाधान नहीं किया गया, तो उनका आंदोलन और तेज किया जाएगा।

प्रदर्शन में सुभाष आर्य (ग्रामीण अध्यक्ष), सुरेंद्र सोलंकी, दिलीप आर्य, हरकचंद आर्य, मनोज यादव, बलराम यादव, रूपेश आर्य, जितेंद्र सूर्यवंशी, पूर्व ब्लॉक अध्यक्ष शेख पप्पू, शेख वसीम, नत्था सिंह, चंचल आर्य और गौरव आर्य सहित कई कार्यकर्ता मौजूद रहे।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित।
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949